ज्ञानामृत

मार्च, 1983
वर्ष 18 ❋ अंक 9

मूल्य 1.25

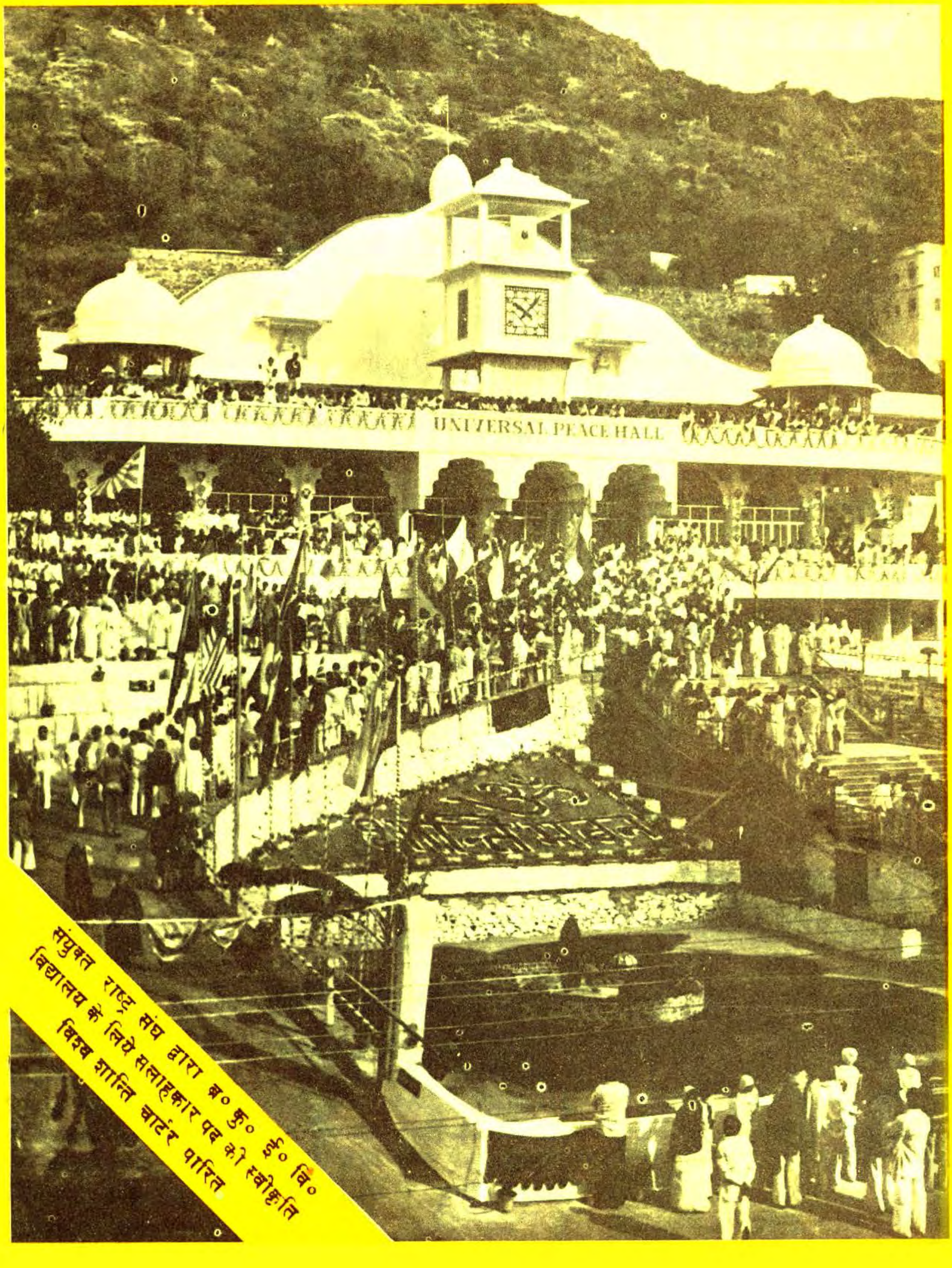

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय के लिये सलाहकार पद की स्वीकृति
विश्व शान्ति चार्टर पारित

Regd. No. D (DN)-978

11 फरवरी 1983 को हुए वृहद् सत्र में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, उनकी बाईं ओर बैठे हैं ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी, बिल्लीज हर्मन, सामिजिक वैज्ञानिक सानफ्रांसिस्को तथा जी० जी० मीरचन्दानी, महाप्रबन्धक यू० एन० आई, दिल्ली।

9 फरवरी 1983 को आबू पर्वत पर यूनिवर्सल पीस हाल का उद्घाटन दृश्य : चित्र में (बाएं से) भ्राता नगेन्द्र प्रसाद रिजाल, नेपाल के पूर्व प्रधान मन्त्री, दादी प्रकाशमणि जी, दादी जानकी जी, दीदी मनमोहिनी जी, गायत्री मोदी जी, ब्र० कु० पुष्पा तथा अन्य मोमबत्तियां प्रज्जवलित करते हुए।

12 फरवरी, 1983 के बृहद् सत्र में सम्बोधन करते हुए भ्राता एस० बी० चवन, केन्द्रीय योजना मन्त्री तथा उपाध्यक्ष प्लैनिंग कमिशन। मंच पर उपस्थित हैं (बाएं से) ब्र० कु० मोहिनी, भ्राता रमणीक अम्बवानी, तथा दादी ब्र० कु० चन्द्रमणि जी।

10 फरवरी 1983 को विश्व शान्ति महा सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में सम्बोधन करते हुए भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती जी, मंच पर देश विदेश से आए वक्तागण विराजमान हैं ।

चित्र में भ्राता स्टीव नारायण, ग्याना के उपराष्ट्रपति विश्व शान्ति महा सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर ग्याना के राष्ट्रपति की ओर से भेजा शुभकामना सन्देश सुनाते हुए। मंच पर (बाएं से) भ्राता रमेश जी, समाचार ग्रुप के मुख्य सम्पादक तथा प्रबन्धक निर्देशक, जालन्धर, भ्राता नगेन्द्र प्रसाद रिजाल जी, पूर्व प्रधान मन्त्री नेपाल, स्वामी सच्चिदानन्द जी, भ्राता जत्ती जी, भ्राता रेड्रिगो केरेज़ो ओडियो, कोस्टारिका, तथा अन्य ।

11 फरवरी 1983 को "शान्ति के लिये विज्ञान" वर्कशाप के अवसर पर मंच पर विराजमान हैं ब्र० कु० जुलीटा, ब्राज़ील, तथा ब्र० कु० निर्मला कजारिया, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में राजयोग सेवाकेन्द्रों की निर्देशिका ।

विश्व शान्ति महासम्मेलन के उपलक्ष्य में 9 फरवरी 1983 को आबू पर्वत पर एक विशाल शान्ति यात्रा निकाली गई । जिस में लगभग 40 देशों से पधारे 3000 भाई बहनों ने भाग लिया ।

भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह 22 फरवरी 1983 को अहमदाबाद पधारे : उनके साथ खड़े हैं (बाएं से) ब्र० कु० हंसमुख भाई, पोपट भाई, भ्राता प्रबोध रावल, (गुजरात के गृह मन्त्री), ब्र० कु० सरला बहन, तथा ब्र० कु० कान्ता बहन ।

आबू पर्वत पर हुए विश्व शान्ति महासम्मेलन में 13 फरवरी के बृहद् सत्र में मंच पर विराजमान हैं (बाएं से) डॉ० विल्लीज़ हर्मन (सान फ्रांसिस्को) भ्राता जगदीश चन्द्र जी, डॉ० राबर्ट मुल्लर, सहायक महासचिव संयुक्त राष्ट्र संघ, न्यूयार्क तथा दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय ।

10 फरवरी को विश्व शान्ति महासम्मेलन उद्घाटन-दृश्य । चित्र में ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, दीदी मनमोहिनी जी, ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, भ्राता बी० डी० जत्ती, भारत के भूतपूर्व उप-राष्ट्रपति, स्वामी सच्चिदानंद जी तथा अन्य मोमबत्तियां प्रज्जवलित करते हुए ।

अमृत सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	माउन्ट आबू में हुए विश्व शान्ति महा-सम्मेलन की उपलब्धियाँ (सम्पादकीय)	२
२.	विश्व शान्ति महासम्मेलन समाचार (चित्रों में)	४
३.	आबू अब्बा के घर में विश्व शान्ति महासम्मेलन	५
४.	आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास का समन्वय ही श्रेष्ठ जीवन का आधार	७
५.	परमात्मा स्वयं नए विश्व का निर्माण कर रहे हैं	९
६.	महिला सम्मेलन	१०
७.	आन्तरिक शान्ति के लिए दिव्य गुणों की धारणा आवश्यक	११
८.	विश्व शान्ति के लिये घोषणा पत्र तथा आचार एवं व्यवहार संहिता	१३
९.	सेवा समाचार (चित्रों में)	२०
१०.	विश्व शान्ति सम्मेलन का चार्टर सत्र	२१
११.	न्याय क्षेत्र में आध्यात्मिकता लाएं	२२
१२.	मन को सूक्ष्म बनाओ	२४
१३.	मुझे दानव से देवता बनाने वाली ब्रह्मा-कुमारी बहनें	२६
१४.	शान्ति गीत	२९
१५.	शान्ति स्थापना करने में प्रचार साधनों का योगदान	३०
१६.	शान्ति के लिये विज्ञान	३१
१७.	शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शान्ति होना चाहिये	३२

संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव भ्राता राबर्ट मुल्लर, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि, ब्र०कु० ई० विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका तथा ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी, अतिरिक्त प्रशासिका को संयुक्त राष्ट्र संघ का ध्वज भेंट कर रहे हैं। इससे पूर्व दीदी तथा दादी जी ने उन्हें बाबा के घर (मधुबन) मानो अपने घर की चाबी भेंट की और कहा आपका यहां सदा स्वागत है।

माउन्ट आबू में हुए विश्व शान्ति महासम्मेलन की उपलब्धियां

फ़रवरी में माउन्ट आबू में जो विश्व शान्ति सम्मेलन हुआ उसकी अनेकानेक उपलब्धियाँ हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि बहुत सी विशिष्ट आत्माएँ, जो ईश्वरीय सन्देश फैलाने के लिए 'माईक' (Mike) सिद्ध हो सकते हैं, वे इस सम्मेलन के निमित्त कारण से मधुबन में पधारे। परमपिता और प्रजापिता के घर में आना ही किसी सौभाग्यशाली व्यक्ति के भाग्य में होता है। अतः वे सभी सौभाग्यशाली तो हैं ही कि वे परमात्मा की कर्तव्य भूमि पर तथा पवित्र एवं तपस्विनी बहनों-राजयोगी आत्माओं की तपोभूमि पर पधारीं। इनमें हर वर्ग के लोग थे। कई विश्वविद्यालयों के उपकुलपति थे, कई देशों के प्रथम श्रेणी के राजनीतिज्ञ भी थे, पहली पंक्ति के प्रसाराधिकारी (Mediamen) भी थे और गण्यमान्य न्यायविद या डाक्टर भी थे। सभी ईश्वरीय वाटिका के रंग-बिरंगे फूल थे, और उन सभी में अपनी-अपनी सुगन्धि थी। ऐसा लगता ही नहीं था कि वे कोई बाहर से आये हुए अपरिचित व्यक्ति हैं। आते ही प्रायः सभी ऐसे घुलमिल से गये थे कि लगता था कि ये तो कई बार आ चुके हैं और मानसिक रूप से भी निकटवर्ती हैं। अवश्य ही उन्हें भी ऐसा लगता होगा कि वे जिस परिवार से खो गये थे उसमें वापस आ गये हैं। मेरे विचार में उन्हें अब मधुबन की संस्मृतियाँ भूलेंगी नहीं बल्कि बार-बार उन्हें आने के लिये प्रेरित करेंगी क्योंकि विश्व भर में आत्मीयता का, निःस्वार्थ ईश्वरीय स्नेह का, शान्ति के निर्मल सम्बन्धों का दूसरा कोई भाग है ही नहीं। वैज्ञानिक पृथ्वी के अतिरिक्त जो दूसरी दुनिया ऊपर खोज रहे हैं, वह यहीं और यहीं तो है।

फिर आने वाली आत्माओं में से ऐसी भी तो विशिष्ट आत्माएँ थी जिन्होंने परमपिता शिव एवं प्रजापिता ब्रह्मा (बाप-दादा) का सन्देश सुना या उनके पधारने तथा सम्बोधित करने का अनुपम वृत्तान्त देखा, जाना और उनके महावाक्य सुनने का श्रेष्ठ अवसर प्राप्त किया। निश्चय ही अविनाशी पिता के विश्व परिवर्तक महावाक्य एक दिन उन पर अवश्य रंग लायेंगे। वास्तव में जिस किसी भी विशिष्ट व्यक्ति से मधुबन में बात हुई, उसने स्वयं ही मधुबन के अध्यात्मिक वातावरण की, शान्ति की अनुभूति की, सुन्दर व्यवस्था की तथा निस्वार्थ सेवा-भाव की चर्चा की। उदाहरण के तौर पर प्रेस ट्रस्ट आफ इन्डिया के डिप्टी चीफ ऐडीटर (Dy. Chief Editor) भ्राता भारतभूषण जी ने कहा-"मैं यहाँ पहली बार आया हूँ; मैं कह सकता हूँ कि पहले कभी भी इतनी संख्या में पवित्र एवं महान् आत्माओं के सम्पर्क में एक ही स्थान पर और एक साथ में नहीं आया। यहां आकर मुझे यह भी अनुभव हुआ कि प्रेम अभी भी संसार में जीवित है।...मैंने यहां ब्रह्मा-वत्सों के नेत्रों में जो पवित्रता की चमक और स्नेह की रोशनी देखी और उनके व्यवहार में शान्ति और मानसिक स्थिरता का अनुभव किया उससे मैं अकेला ही अपने कार्य में और अधिक जुटे रहने की प्रेरणा प्राप्त करता रहा।" इन्हीं भ्राता भारतभूषण ने आबू में अपने निवास के प्रारम्भिक दिनों में ही यह भी समाचार प्रसारित किया था कि इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के प्रशिक्षण से प्रतिदिन लाभ लेने वाले सभी व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं जिससे कि जन-संख्या की अतिवृद्धि की रोकथाम में देश को बहुत महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है।

इसी प्रकार कोस्टरिका (Costa Rica) देश के भूतपूर्व प्रधान और वर्तमान काल में संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) द्वारा मान्यता प्राप्त 'शान्ति विश्वविद्यालय' (Peace University) की मनोनीत सभा के प्रधान

भ्राता रोड्रीगो केराज़ो ने अपनी एक भेंट-वार्ता में कहा- "अब मैं समझ गया हूँ कि यहां सभी 'भाई' और 'बहन' क्यों कहलाते हैं और मुझे यहाँ किस लिए आमन्त्रित किया गया है। सचमुच आप लोग मनो परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का एक अद्भुत कार्य कर रहे हैं जिससे ही शान्ति स्थापित होगी।"उन्होंने यह भी कहा- "मुझे यहाँ बहुत अद्भुत और गहरे अनुभव हुए हैं। मैं आपको बताता हूँ कि यों तो मैं पहले भी परमात्मा के निकट आने का पुरुषार्थ करता रहा हूँ; मैं प्रतिदिन प्रार्थना भी किया करता हूँ। परन्तु यहाँ पर 'बहन' 'भाइयों' के साथ मिलकर जो ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास मुझे न केवल सहज तथा बल्कि एक मनोविनोद की तरह भी लगा। "इसी प्रकार, संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महामंत्री(Asstt. Secretary General), भ्राता डा० मुल्लर ने कहा "यहां का मेरा अनुभव अनोखा और गहरा रहा।" जब वे प्रस्थान करने से पूर्व दादी जानकी से मिल रहे थे, तब उन्हें भी कह रहे थे कि आप हमें 'सन्देश' भेजते रहियेगा, मुझे इनकी बहुत जरूरत है। बाप-दादा से जब वे मिले थे तो बाप-दादा ने इन्हें कहा था कि 'कार्य में जुट जाओ'। बस ये शब्द उनके मन-मस्तिष्क पर छप गये थे। उन्होंने कई बार यह सन्देश दुहराया और मिलने वालों से बार-बार कहते कि बाबा ने मुझे कहा है- "तुम काम करते जाओ।" साथ में वे यह भी कहते कि बाबा के ये शब्द मेरी बुद्धि में ठीक जम गये हैं।

वास्तव में आने वालों के मन पर मधुबन की छाप लगना आशा के अनुसार ही था, मधुबन बाप-दादा का कार्य-क्षेत्र जो है। वहाँ के संगठन, एकता, पवित्र वातावरण, भ्रातृत्व-भरा रूहानी प्रेम, सेवा भाव, सादगी और सफाई, सेवा भाव और सच्चाई से कौन अछूता रह सकता था ? हरेक ब्रह्मा-वत्स सेवा-भाव से प्लावित, ईश्वरीय कार्य में तत्परता, नैनों में परम प्यारे परमपिता की याद आने वालों के लिये इस बात का मूक सन्देश देते थे कि-भाइयों और बहनों, जानते हो कहाँ आये हैं, यह आपके परमप्रिय परमात्मा का घर है। "मधुबन में लिखा हुआ भी था- यह आपका और आपके स्नेही परमपिता का घर है, दादी जी, दीदी जी तथा अन्य वक्ताओं ने कहा भी था कि आप उस परमपिता के निमन्त्रण पर यहाँ पधारे हैं; यह कार्यक्रम उन्हीं की सम्मति से बना है....।"
फिर सभी ने देखा भी कि कैसे यहाँ का जीवन एक आध्यात्मिक परिवार के जैसा है। सभी अपने-अपने कार्य में ऐसे लग्न से मग्न हैं, ऐसे स्वशासन-अनुशासन प्रेम और नेम से जुटे हैं कि जैसा पहले कहीं देखा नहीं। भोजन सेवा में जुटे बहन-भाइयों ने सदा यह समझ कर भोजन परोसा कि ये शिव बाबा के घर आये हैं और हमारे ही नये बहन-भाई हैं। कहीं भी किसी को परायेपन की, दूरी की, औपचारिकता की या सांसारिकता की गंध नहीं आयी होगी। कितने ही प्रेस-प्रतिनिधियों (Press representatives) ने कहा भी, कि हमने यहाँ अन्दर से टटोलने की कोशिश की है, हम कई ब्रह्मा-वत्सों से मिले हैं, जिससे चाहा, उस से हमने बात की है, कमाल तो यह है कि सभी में शान्ति है, सभी को पर्याप्ति की अनुभूति है।

वास्तव में मधुबन में अपना अपना ही एक नगर-सा बसा हुआ था। रौनक ही निराली थी। जीवन में यह सभी एक सुखद और सुहावना अवसर था जिसके संस्मरण अमिट रहेंगे। बाप-दादा ने अपना कार्य करा ही लिया। भाग्य-विधाता ने अनेकानेक आत्माओं का भाग्य जगा दिया। वाह बाबा वाह ! वाह बाबा के सपूतो वाह ! वाह नए आने वाले बहन-भाइयों वाह! मन में केवल एक ही आशा रह गयी कि सभी ब्रह्मा-वत्स इस अवसर पर आ सकते होते तो वे कितने खुश होते और हम भी कितने खुश होते !!

—जगदीश

आदरणीय भ्राता दलाई लामा के प्रतिनिधि भ्राता कर्मा मुल्लन, माउन्ट आबू में विश्व शान्ति महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह में दलाई लामा जी का शुभ कामना सन्देश सुनाते हुए।

आबू में हुए विश्व शान्ति महासम्मेलन के सत्र में भाषण करते हुए कीन्या के सहायक मन्त्री। मंच पर (बाएं से) भ्राता बी० आर० कृष्णा अय्यर, बहिन एलिन कैंडी, स्काटलैण्ड, ब्र०कु० ओमप्रकाश जी तथा ब्र०कु० रमेश भट्ट।

आबू—अब्बा के घर में

विश्व शान्ति महा-सम्मेलन

लगभग पिछले तीस वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय परमात्मा द्वारा सिखाए जा रहे सहज ज्ञान और राजयोग का परिचय देने लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के साधन अपनाता रहा है। आरम्भ में केवल व्यक्तिगत रूप से तथा प्रवचनों के ही रूप में ईश्वरीय सन्देश दिया गया। कहा जाता रहा कि ब्रह्माकुमारियाँ खुले मैदान में आएं। फिर आध्यात्मिक प्रदर्शनियों का कार्य शुरु हुआ, प्रोजैक्टर शो का सिलसिला चला। विश्व का भविष्य आदि बड़े-बड़े सम्मेलन हुए, बड़े-बड़े आध्यात्मिक मेले किये गए। कुछ समय पूर्व लाल किला, मैदान दिल्ली में "विश्व कल्याण महोत्सव" सन्पन्न हुआ और अभी-अभी ६ से १४ फरवरी को आबू—अब्बा के घर में विश्व शान्ति महासम्मेलन सम्पन्न हुआ। पिछले तीस वर्ष के सेवा के अवलोकन से हमें गर्व होता है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय व्यक्तिगत से विश्व स्टेज पर आ पहुंचा है और प्रत्येक सेवा के कदम से इसकी प्रतिमा अधिक निखर कर विश्व के सामने आई है। इस विश्व-विद्यालय की महत्ता को जानकर अब संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्थाओं की संस्था का सदस्य बनाने के अतिरिक्त सामाजिक आर्थिक सलाहकार कमेटी का भी सदस्य बनाया है। कुछ वक्ताओं ने इस विश्व विद्यालय को शान्ति विश्व विद्यालय (Peace University) कहा तो कुछ ने मानव मात्र की आशा। हर एक बाबा के घर से शान्ति की आंचली भर कर ले गया।

इस सम्मेलन में लगभग चालीस देशों के महानुभावों ने भाग लिया तथा ३००० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

इस पांच दिवसीय विश्व शान्ति महा-सम्मेलन का धार्मिक नेताओं के शुभ वर्चना के साथ ६ फरवरी को शुभारम्भ हुआ, जिसमें उद्घाटन समारोह व समापन समारोह सहित २१ सत्रों का आयोजन किया गया। इस महासम्मेलन का मुख्य उद्देश्य मनुष्य मात्र के जीवन में सच्ची शान्ति लाने का सतत प्रयास करते रहना है।

इस सम्मेलन की एक विशेषता यह भी थी कि विभिन्न देशों के सामाजिक संगठनों व विभिन्न व्यवसाय के प्रमुख व्यक्ति मिलकर ऐसे उपायों पर विचार करें जिससे व्यक्ति व देश में स्थाई शान्ति स्थापन हो सके।

प्रमुख व्यवसायों एवं सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षाविदों, न्यायविदों, वैज्ञानिकों, व्यापारियों, उद्योगपति, धार्मिक नेताओं, डाक्टरों एवं महिलाओं आदि-आदि के अलग-अलग सत्र रखे गये थे ताकि अशान्ति लाने वाले सभी कारणों पर गहराई से विचार किया जा सके। इन सत्रों का मुख्य उद्देश्य हिंसा, आर्थिक शोषण, भ्रष्टाचार, सामाजिक कुरीतियों व अन्य सभी प्रकार की बुराइयों की गंभीर समस्याओं को पूर्ण रूप से समझकर उसके निवारण के लिए सभी वर्ग के विशेषज्ञों का सहयोग प्राप्त करना था।

सम्बन्धों में सुधार के बिना विश्व-शान्ति असम्भव

वर्तमान एवं भूत में घटित प्रमुख घटनाओं से परिचित प्रत्येक व्यक्ति यह मानेगा कि विश्व-शान्ति की समस्या का सम्बन्ध व्यक्तिगत जीवन स्तर और व्यवहारिक सम्पर्क पर आधारित है। अतः यह स्पष्ट है कि इन सब समस्याओं का निवारण व्यक्तिगत, देशीय एवं अन्तर्देशीय सम्बन्धों पर आधारित है तथा लोगों का श्रेष्ठ जीवन-स्तर होने से ही समस्याओं का समाधान संभव है। इससे

यह भी निष्कर्ष निकलता है कि अशान्ति का मूल कारण व्यक्ति एवं समाज द्वारा सर्वमान्य नैतिक सिद्धान्तों की उपेक्षा करना है। अत: इस सम्मेलन का एक उद्देश्य यह भी था कि विश्व शान्ति के लिए पारस्परिक सम्बन्धों में सुधार लाया जाये। जिनका सम्बन्ध प्रत्येक व्यवसाय व सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों के पालन करने से है।

सम्मेलन के उद्देश्य—

अत: इस सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :—

१. समाज के सभी स्तर के लोगों के जीवन में सुधार लाने के लिये नैतिक नियम व सिद्धान्तों का प्रतिपालन करना।

२. सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों को सच्ची शान्ति व सुख की अनुभूति कराना।

३. मानव मात्र के कल्याण में बाधक सभी समस्याओं का हल निकालना।

४. विश्व भर की समस्याओं के सफल हल से लाभाविन्त करने के लिये सभी प्रकार के कार्य क्षेत्रों के उच्च पदासीन व्यक्तियों को उससे अवगत कराना।

५. ऐसा अवसर उपस्थित करना जिसमें सभी विशिष्ट व्यक्ति परस्पर मिलकर विचार विमर्श करें, और इसमें प्रस्तुत सुझावों के प्रति अपने मनोभाव प्रकट करें तथा निष्कर्ष निर्धारित करें व उन्हें अपने-अपने कार्य क्षेत्र में प्रयोग करें।

६. सभी धार्मिक संस्थाओं का शान्ति पूर्वक वातावरण बनाने में सहयोग प्राप्त करना।

७. लेखकों, विद्वानों, बुद्धिजीवियों, एवं प्रसारण के साधनों में लगे लोगों का भी सहयोग प्राप्त करके अशान्ति व पारस्परिक लड़ाई झगड़ों को जड़ मूल से समाप्त करना।

८. अपराधों की रोकथाम के लिए न्यायवादियों का सहयोग प्राप्त करना।

९. शान्ति स्थापना में महिलाओं का योगदान प्राप्त करना।

१०. इस सम्मेलन का एक उद्देश्य यह भी था कि इसमें भाग लेने वालों को राजयोगाभ्यास द्वारा उस परम स्रोत से युक्त होने की अनुभूति कराई जावे।

ऊपर दिये गए उद्देश्यों की पुर्ति हेतु आयोजकों ने भिन्न-भिन्न कार्यक्रम रखे। अन्त में एक विश्व-शान्ति चार्टर भी पेश किया गया जो सर्व सम्मति से पास हुआ। इस सम्मेलन में विश्व-बन्धुत्व की भावना की झलक देखने को मिली। किस प्रकार भिन्न-भिन्न देशों के, वर्गों के, रंगों के, व्यवसाओं के लोग आपस में मिलकर विश्व की समस्याओं पर विचार कर रहे थे। हर सत्र के बीच राजयोग का अभ्यास कराया जाता था, अन्त के दिन बाबा की पहाड़ी पर खुले आकाश के नीचे राजयोग का अभ्यास कराया गया। कितना सुन्दर और शान्तिमय दृश्य था वह! अवश्य ही सर्व को शान्ति का अनुभव हुआ होगा! अवश्य ही इस सम्मेलन से देश-देशान्तर तक शान्ति की किरणें पहुंचेगी और इससे दूरगामी परिणाम निकलेंगे और बाबा का सन्देश दूर-दूर तक फैले इस में यह महा-सम्मेलन सहायक सिद्ध होगा।

★

इस अंक में महा सम्मेलन के कुछ सत्रों के भाषणों के सार दिये गए हैं। स्थानाभाव के कारण समस्त भाषण नहीं दिये जा सके।

(सम्पादक)

"आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास का समन्वय ही श्रेष्ठ जीवन का आधार"

—बी० डी० जत्ती

विश्व शान्ति का प्रथम सूत्र—"एकता है"

—दादाजी

१० फरवरी को ओम शान्ति भवन में यूनिवर्सल पीस हाल में अन्तर्राष्ट्रीय विश्व शान्ति महासम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति माननीय बी० डी० जत्ती ने कहा कि आज मानव के भौतिक विकास में पश्चिम का विशेष योगदान है एवं उसके आध्यात्मिक विकास में पूर्व की महत्त्व-पूर्ण भूमिका है। अत: यदि जीवन में दोनों अर्थात् भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के सामन्वयम को अपनाया जाये तो यही हमारा सर्वश्रेष्ठ जीवन होगा। आगे आपने कहा कि आत्मिक चिन्तन ही योग है, जिसके द्वारा परमात्मा को पाया जा सकता है। परन्तु मानव की कमज़ोरियों एवं इच्छाऐं तथा मानवता में व्याप्त विकार ईश्वर प्राप्ति में बाधक हैं। अत: इनका नियन्त्रण अति आवश्यक है, जिसे हम परमात्मा अनुभूति के द्वारा सहज कर सकते हैं।

सम्मेलन के माननीय अतिथि ग्याना के उप-राष्ट्रपति भ्राता स्टीव नारायण ने अपने देश की जनता की ओर से शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि शान्ति के विषय में व्यक्ति एवं समाज अनेक शदियों से किसी न किसी तरह के सोच करता आ रहा है। राजनीतिज्ञ, शिक्षाशास्त्री एवं धार्मिक नेताओं आदि सभी ने अपने-अपने तरीकों से विभिन्न प्रयास किये हैं। किन्तु अब वह समय आ गया है, जबकि विश्व में राजयोग के माध्यम से शीघ्र ही सम्पूर्ण शान्ति की पुन: स्थापना होगी।

विश्व शान्ति महासम्मेलन की अध्यक्षा एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणीजी ने अपने अत्यन्त ही मनन-शील एवं संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि आज विश्व की सर्व समस्याएँ और अशान्ति का मूल कारण मानवता में व्याप्त आपसी मतभेद एवं मेरा-पन है। इन्हीं मतभेदों के कारण उसने पृथ्वी, जल एवं आकाश में भी सीमाएँ बांध डाली हैं परन्तु क्या वह सूर्य, चाँद एवं सितारों को सीमा में बांध सका है ? क्योंकि वे एक हैं और एक रहेंगे। अत: हमें सोचना चाहिए कि हम सब आत्माऐं भी उस एक परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं और हम सब का आपसी नाता भाई-बहन का है। यदि यह मधुर सम्बन्ध सदा स्मृति में रहे तो हम आपस में सुख-शान्तिमय जीवन व्यतीत कर विश्व-शान्ति की सहज ही स्थापना कर सकते हैं। आपने आगे कहा कि हमारे कार्य क्षेत्र विभिन्न होते हुए भी हम परमात्मा के सम्बन्ध से एकता में रहकर, मैं, मेरा, तू, तेरा को भुलाकर यदि स्मृति में रहें कि हम एक थे, एक हैं और सदा एक रहेंगे। क्योंकि आखिर हम सबको जाना एक परमपिता परमात्मा के पास ही है। यह शक्तिशाली स्मृति विश्व को एकता के सूत्र में बांधकर शान्ति सम्पन्न बना देगी।

विश्व शान्ति महासम्मेलन के शुभारम्भ के पूर्व नव निर्मित ओमशान्ति भवन, जो कि एशिया में अपने प्रकार का पहला विशाल भवन है के प्रागंण में माननीय जत्तजी एवं दादीजी ने संयुक्त रूप से ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न किया। तत्पश्चात् महा सम्मेलन का शुभारम्भ समारोह प्रारम्भ हुआ। जिसमें हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष मान-नीय टी० एस० नेगी, अमेरिका से स्वामी सच्चिदा-नन्द, काउन्सिल ऑफ यूनाईटेड नेशन्स यूनिवर्सिटी

विश्व शान्ति महासम्मेलन के उद्घाटन से पूर्व शिव ध्वजारोहण का दृश्य

ऑफ पीस कोस्टारिक के अध्यक्ष माननीय **रोड्रिगो** केराज़ो ओडियो, केनिया के विकास एवं योजना मंत्री, नेपाल के भूतपूर्व प्रधानमंत्री नगेन्द्रप्रसाद रिजाल, जिम्बाबवे के विकास एवं योजना उपमंत्री, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल के अतिरिक्त मुख्य सचिव सन्तोषकुमार शर्मा, समाचार ग्रुप ऑफ पेपर्स जालन्धर के प्रबन्ध निर्देशक आदि ने भी इस अवसर पर अपने विचर व्यक्त किये। सम्मेलन के प्रारम्भ में प्रसिद्ध संगीतकार कल्याणजी आनन्द जी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किये एवं विश्व शान्ति महासचिव निर्वैरजी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया तथा "प्यूरिटी", "ज्ञानामृत" एवं "वर्ल्ड रिन्युवल" के प्रधान सम्पादक ब्रह्माकुमार जगदीशचन्द्र जी ने सम्मेलन के उद्देश्यों से परिचित कराया, बम्बई के वर्ल्ड रिन्युवल ट्रस्ट के प्रबन्धक रमेश शाह ने संस्था द्वारा की गई ईश्वरीय सेवाओं की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अन्त में कर्नाटक पुलिस के महानिर्देशक (रिटा०) एच० वीरभदरीया ने सभी का आभार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन राजयोग सेन्टर लन्दन की निर्देशिका ब्रह्माकुमारी जयन्ती बहन ने किया। □

१० फ़रवरी १९८३ को विश्व शान्ति महासम्मेलन के उद्घाटन के शीघ्र बाद ब्र० कु० जयन्ती जी ने यू० एन० आई का यह समाचार सुनाया कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्र० कु० ई० विश्व-विद्यालय को सलाहकार के रूप में स्वीकृति दी है तो यूनिवर्सल पीस हाल तालियों से गूंज उठा।

परमात्मा स्वयं नए विश्व का निर्माण कर रहे हैं

११ फ़रवरी वृहद् अधिवेशन में ब्र० कु० निर्मल शान्ता के उद्‌गार

यह सत्र ब्र० कु० ई० विश्वविद्यालय के भारत के पूर्वी क्षेत्र के सेवा केन्द्रों की संचालिका ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी के आशीर्वाद प्रवचन से आरम्भ हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में अपना अनुभव सुनाया कि किस प्रकार और कब वह इस संस्था में सम्पर्क में आईं। आरम्भ में उनका अपने पिता जोकि परमात्मा शिव के साकार माध्यम बने और जिन्हें प्रजापिता नाम मिला, से काफी लगाव था। उन्हें कई साक्षात्कार हुए और उन्हें आभास आता था कि उनके शारीरिक पिता में बहुत परिवर्तन आ गया है। निराकार परमात्मा शिव के अवतरण के पश्चात् जब दादी निर्मल शान्ता एक दिन अपने लौकिक पिता से मिलने गईं, तो बाबा ने जब यह पूछा कि इस शरीर में किसे देख रही हो। उस दिन से दादी निर्मल शान्ता में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। बाबा के निर्मोही व्यवहार ने भी बहुत प्रभावित किया। उन्होंने प्रवचन में कहा कि उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा का श्रीकृष्ण के रूप में साक्षात्कार किया। मुझे आत्म-स्मृति में स्थित रह कर निराकार परमात्मा जोकि सदा पवित्रता के सागर, शान्ति के सागर और ज्ञान के सागर है, के समान बनने की शिक्षा मिली। अन्त में उन्होंने श्रोतागण से कहा कि विश्व भर में यह एलान कर दें कि परमपिता परमात्मा स्वयं यहां आया है और मानव मात्र में पवित्रता का संचार करके नए विश्व का निर्माण कर रहा है।

इसके पश्चात इन्स्टीट्यूट आफ न्युटिक सांइसेज़, सानफ्रान्सिस्को के डा० विल्लिज व० हर्मान ने अपने भाषण में कहा कि पुराने विश्व के बदलने के कारण मौजूद हैं। प्रगतिशील राष्ट्र उन्नत राष्ट्रों से छुटकारा पा रहे हैं। अब मानव मात्र यह महसूस करने लगा है कि आध्यात्मिक मूल्यों से मानव का कल्याण हो सकता है। "मैं घटिया हूं" यह भाव बदल रहा है। मानव मन की मूलभूत धारणा समान है। "एक दूसरे की मदद करना" सर्व को अच्छा लगता है। **विश्व के परिवर्तन में इस विश्वविद्यालय का योगदान सराहनीय है**...।

इसके पश्चात् लन्दन में राजयोग सेवाकेन्द्रों की निर्देशिका ब्र० कु० जयन्ति जी ने कहा कि इच्छाएं और परिकल्पनाएं आवश्यक हैं क्योंकि इनके बगैर क्रियात्मिक रूप नहीं आ सकता। आज प्रश्न यह है कि आज के राजनैतिक, धार्मिक तथा अन्य क्षेत्रों में जो अनुशासनहीनता अनेकता, अस्थिरता है समाप्त हो अनुशासन, एकता तथा स्थिरत कैसे आएगी। यह एक सैकन्ड के अनुभव की बात है। उन्होंने एक अन्डे की मिसाल दी। बाह्य तौर पर अन्डा शायद अच्छा न लगे। परन्तु जब वह फूटता है और छोटा चूज़ा बाहर आता है, हर एक को अच्छा लगता है। इसी प्रकार इस अव्यवस्थता के पश्चात् नए विश्व का उदय होगा परन्तु अन्डा टूटना आवश्यक है अर्थात् विनाश आवश्यमभावी है चाहे इसे कोई पसन्द करे या न करे।

"माऊँट आबू जैसे स्थानों की संख्या बढ़ाओ"

भ्राता जी० जी० मीरचन्दानी जनरल मैनेजर यू० एन० आई०, नई-दिल्ली ने अपने प्रवचन में कहा कि रामराज्य ही, जहां प्रजा और राजा दोनों सुखी थे, सर्वत्र शान्ति और एकता थी, नए विश्व की परिकल्पना है, साधारण मनुष्य को वर्तमान ढाँचे के विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिये। माऊँट आबू जोकि विशेष स्थान है जहां नए विश्व के निर्माण का कार्य हो रहा है, **अब ऐसे विशेष स्थानों की संख्या बढ़नी चाहिये**। यह ईश्वरीय सन्देश समाचार पत्रों, टी० वी०, आकाशवाणी द्वारा जन-२ तक जाना चाहिये। उनकी राय थी कि नाटक, गीत इत्यादि यह सन्देश फैलाने में काफ़ी सहायक होंगे।

पवित्रता ही सुख शान्ति की आधारशिला

प्यूरिटी, वर्ल्ड रीन्युवल तथा ज्ञानामृत के मुख्य सम्पादक तथा लेखक ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि रामराज्य तब तक नहीं आ सकता जब तक कि हर एक सुखी और प्रसन्न न हो, और शासक रहम दिल न हो। शान्ति और पवित्रता एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। जब पवित्रता होगी, शान्ति स्वयं स्थापन हो जाएगी। समाज में अपराध नहीं होगा, मानव मन में पवित्रता होने कारण अपराध नहीं जन्मेगा। जब अपराध नहीं होंगे तो न्यायालय, न्यायाधीश, पुलिस या कारागार अनावश्यक होंगे। विश्व एकता, समाज में आपसी भाईचारा होगा जोकि सामाजिक परिवर्तन लायेगा। आर्थिक स्थिरता होगी क्योंकि वहां नफ़रत, बदले की भावना, दुर्भावना नहीं होगी। परमपिता शिव इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा ऐसे रामराज्य की स्थापना का कार्य करा रहे हैं।

बहन जे० एल० नविन्या, जिम्बाबवे के मैन-पावर, प्लैनिंग के उपमन्त्री ने आशा व्यक्त की कि नये विश्व समाज की शीघ्र स्थापना होगी, जहां सम्पूर्ण सुख और शान्ति होगी।

राजयोग द्वारा ही विश्व शान्ति सम्भव

भारत के उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश भ्राता वी० आर० कृष्णा अय्यर ने प्रवचन में कहा कि मानव मात्र की शान्ति की आशा, सर्वत्र सुख की इच्छा केवल परमात्मा से योग द्वारा ही पूर्ण हो सकती है। उन्होंने कहा जब विज्ञान की उन्नति के साथ-२ आध्यात्मिकता आगे बढ़ेगी, शिल्पकला विज्ञान के करिश्मों के साथ-२ आत्मानुभूति का समन्वय होगा तब ही नया विश्व समाज प्रत्यक्ष होगा।

★

महिला सम्मेलन

माउंट आबू में विश्व शान्ति सम्मेलन के अन्तर्गत महिला सम्मेलन में बम्बई की राजयोग की शिक्षिका ब्र० कु० ऊषा बहिन ने कहा कि सामाजिक दबाव तथा भेदभाव से अपने आप को मुक्त करा कर आज की नारी अपनी स्नेह व सेवा-सुश्रुषा की आन्तरिक विशेषताओं के द्वारा सारी मानव जाति को मुक्त कराने के लिए सामने आई है।

आस्ट्रेलिया की न्यायाधीश, मोरिन चेन, जो कि वर्तमान समय ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के हांग-कांग सेवा केन्द्र पर कार्यरत हैं, ने कहा कि नारी-आन्दोलनों के नेताएं एक सन्तुलित समाज को विकसित करने के उद्देश्य से जागृति बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कई स्त्रियाँ मानसिक विकास के लिए कार्य करना पसंद करती हैं परन्तु यदि वे मातृत्व के महत्त्वपूर्ण पक्ष को महसूस करें तो वे परिवार तथा समाज दोनों के विकास के लिए कार्य कर सकती हैं।

गुजरात की इन्चार्ज ब्र० कु० सरला ने कहा कि नारी को अपनी आन्तरिक विशेषताओं को अच्छी तरह समझना बहुत जरूरी है कि क्या ये विशेषता शान्ति तथा सद्भावना के विकास के लिए है।

मैसूर ज़ोन की इंचार्ज ब्र० कु० लक्ष्मी तथा अजमेर से राजयोग की शिक्षिका ब्र० कु० राधा ने अपने विचार प्रस्तुत किए कि प्यार एक ऐसी चीज है जिसको कोई बंधन नहीं तथा जिसकी कोई सीमा नहीं। जिस घड़ी हम हद में आ जाते हैं तो मोह और इच्छाएं पैदा हो जाती हैं और हम स्वार्थी बन जाते हैं।

मोदी नगर (यू० पी०) से बहन गायत्री मोदी ने कहा कि समाज से अशान्ति को समाप्त करने में नारी एक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य निभा सकती है। यह कार्य वह अपने दिव्य गुणों तथा शक्तियों द्वारा ही कर सकती है। मां बच्चे की वास्तविक शिक्षक है जोकि जन्म से ही उसके जीवन में दैवी गुण जाग्रत करने में मददगार बन सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की क्षेत्रीय प्रबंधक तथा नारी सलाहकार समिति की उपाध्यक्ष श्रीमति एडवर्ड

(शेष पृष्ठ २२ पर)

आन्तरिक शान्ति के लिए दिव्य गुणों की धारणा आवश्यक

विश्व शान्ति महा सम्मेलन में १२-२-८३ के सायं के वृहद् सत्र में "आन्तरिक शान्ति के लिए दिव्य गुण" विषय पर बोलते हुए ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन (यू० एन० ओ०) ने कहा कि शान्ति शक्ति की प्राप्ति के लिए दिव्य गुणों की धारणा की परमआवश्यकता है। अन्तर्मुखता, गम्भीरता, सहनशीलता, नम्रता, हर्षितमुखता आदि दिव्य गुण धारण कर लें तो शान्ति मिल सकती है। राजयोग अभ्यास से दिव्य गुणों की धारणा स्वतः होती जाती है।

भ्राता एस० बी० चव्हाण, योजना मन्त्री, भारत सरकार, ने कहा कि अणुयुग की समस्या आज बहुत ही अहम प्रश्न है। इसके ऊपर यहां सम्मेलन में अध्यात्मिक क्षेत्र द्वारा चर्चा करना समय की मांग है। मुझे ऐसे सम्मेलन में आकर हर्ष है। नैतिक मूल्यों की धारणा की अति आवश्यकता है। इसके लिए प्रचार के साधनों रेडियो, टी० वी०, एवं सिनेमा का भी माध्यम अपनाया जा सकता है। शिक्षा में भी इसकी आवश्यकता है। वैसे मानव स्वभाव से ही नैतिक मूल्यों में आस्था रखता है परन्तु वातावरण उसे प्रभावित करता है। और नैतिकता समाप्त हो जाती है। एक बात दुखदाई है कि धर्म जो मनुष्यों के जोड़ने का काम करता था, आज आपस में घृणा, द्वेष एवं हिंसा फैला रहा है। ऐसे धर्म की संकीर्णता से भी नैतिक मूल्यों की हानि हो रही है। इसलिए सर्वभौमिक धर्म को अपनाना होगा। सभी धर्मों में सहिष्णुता लानी पड़ेगी, तब ही शान्ति की स्थापना होगी। सभी धर्मों की अच्छाइयों को सभी को धारण करना है। नैतिक मूल्यों की अच्छी बातों को स्कूलों में पढ़ना है।

चव्हाण जी ने बताया कि शिक्षा का मतलब तो यही है कि मानव का मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक तीनों ही रूपों में विकास हो, लेकिन हम देख रहे हैं कि नैतिक मूल्यों के ह्रास से सब कुछ नाश हो रहा है। इसलिए यदि मानव को अपना अस्तित्व रखना है, तो आवश्यक रूप से नैतिक मूल्यों को अपनाना ही होगा। बिना नैतिक मूल्यों के धारण किये मनुष्य मात्र एक चैतन्य मशीन के समान ही है, जिसमें दया-क्षमा-करुणा-प्रेम-शान्ति नहीं है। प्रेम एवं शान्ति हमारे भारत की हर मनुष्यात्मा की विशेषता ही है। भारत एक भाग्यशाली देश है, जहां पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय शान्ति-प्रेम एवं पवित्रता की शिक्षाऐं सारे विश्व को दे रहा है। इस विश्व शान्ति सम्मेलन में जो भी वैज्ञानिक, डाक्टर, जज, शिक्षाशास्त्री, समाजशास्त्री भाग ले रहे हैं, उनसे आग्रह है कि वे सब मिलकर विश्व शान्ति के लिए सर्वमान्य कार्यक्रम नैतिक मूल्यों के प्रसारण हेतु तैयार करें, ताकि विश्व का कल्याण हो सके।

भ्राता पट्टाभिरामाराव, राज्य मंत्री, भारत सरकार ने कहा कि विश्व में अशान्ति का बड़ा कारण बड़े देशों द्वारा विकासशील देशों का शोषण, असमानता, भूख, एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास तथा भयंकर मिसाइल द्वारा युद्धों का खतरा है। उद्योगपति गरीबों का शोषण कर रहे हैं, सम्पत्ति कुछ ही हाथों में सिमट कर रह गई है। भौतिकवाद को आध्यात्मवाद से ही रोका जा सकता है। शान्ति भी तो अध्यात्म से ही मिलेगी। महात्मा गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू जी एवं प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीजी भी शांति का पैगाम देते रहे हैं। भारत हमारा देश शांति का संदेश वाहक रहा है। अब एक प्रश्न है, जो इस कांफ्रेन्स में

निर्णित होना है, वह है विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास कैसे हो ? यह कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय अपनी विश्व में फैली ११०० शाखाओं द्वारा कर रहा है। राजनीति तथा परम्परागत धर्मों के प्रभाव से स्वतंत्र होने के कारण इसकी उपलब्धियां प्रशंसनीय हैं। यह भी सन्तोषजनक बात है कि यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन के साथ-साथ जनता तक परिवार नियोजन का संदेश पहुंचाने का योगदान भी दे रहा है। इसके आध्यात्मिक शिक्षा लेने वाले विद्यार्थी विश्व को शांति का संदेश दें, यह कान्फ्रेन्स सफल हो यही शुभकामना है।

अहमदाबाद के प्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता रमनीक अबम्वानी ने कहा कि मुझ जैसे उद्योगपति के लिए विश्व शांति जैसे गंभीर विषय पर बोलना संभव नहीं है। परन्तु कुछ ऐसे गुण हैं जिन्हें हर क्षेत्र में व्यक्ति अपनाकर विश्व शांति में सहयोगी बन सकता है। मन की शांति लोगों के मन से बहुत दूर चली गई है। हमारे हिन्दू समाज में बचपन से ही कहानियों के रूप में दिव्य गुणों की धारणा कराई जाती थी, परन्तु आज यह सब नहीं है। रामायण की कथा में उच्चकोटि के नैतिक चरित्रों को कथानक के रूप में रखा गया है, जिनसे प्रेरणा ग्रहण की जा सकती है। लेकिन आज के विश्व में समस्या है तर्क बुद्धि की, दिव्य बुद्धि का अभाव है। भयंकर हथियार बनाने वालों का अस्तित्व बदलना होगा कि ये मानवता के विनाश के लिए हैं। इनसे बचो। युद्ध से शान्ति नहीं मिलती वरन् युद्ध विनाश लाता है। हम उद्योगपति भी जब अपने जीवन में झूठ एवं शोषण का व्यवहार कर रहे हैं, अपने बच्चों को वही सिखा रहे हैं, तो मन की शान्ति कहां मिल सकती है। इसलिए आज की दुनिया में हर वर्ग को ईश्वरीय शान्ति लेकर अपने मन को मानव प्रेम एवं शान्ति के लिए तैयार करना होगा। आध्यात्मिकता से दिव्य गुण आते हैं, उससे मन को शान्ति मिलती है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणी (पंजाब जोन की इन्चार्ज) ने कहा कि माता-पिता चाहते हैं कि मेरा बच्चा गुणवान हो, शिक्षक चाहता है कि मेरा शागिर्द गुणवान हो। अब हमें देखना है कि गुणों का भण्डार वही परमपिता परमात्मा है। ज्ञान का भण्डार है, वह स्वयं जो पुष्प चढ़ाने वाले हैं, उनको ज्ञान और योग की नालेज देकर सुन्दर फूल बना रहा है। हर मनुष्य श्रृंगार करने की चाहना रखता है, घर की, शरीर की शोभा बढ़ाना चाहता है। लेकिन परमपिता परमात्मा आत्माओं का श्रृंगार दिव्यगुणों से करते हैं। परमधाम छोड़कर इस पतित दुनिया में, पतित शरीर का आधार लेकर लाखों मनुष्यात्माओं का दिव्य गुणों से श्रृंगार कर गुणवान बना रहे हैं। बाप-टीचर-सतगुरु तीनों ही रूपों में गुणवान बना रहे हैं। बाप स्वयं ही अपना परिचय देकर राजयोग की शिक्षा द्वारा हमारा उद्धार कर रहे हैं। हरेक आत्मा ज्ञान स्वरूप, शान्ति स्वरूप, आनन्द स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शक्ति स्वरूप है। अपने आदि-अनादि गुण स्मृति में रखो तो शान्ति मिलेगी।

अब समय का भी ख्याल रखो। अब कलयुग नहीं है, संगमयुग है। चारों तरफ हाहाकार मचा है, इसके बाद जयजयकार होगी। कलियुग जायेगा, सतयुग आयेगा। अंधेरा जायेगा, प्रकाश आयेगा। सम्पूर्ण विश्व में सुख शान्ति, समृद्धि लाने वाला वह परमपिता परमात्मा शिव स्वयं ही है। मेरा सभी यहां उपस्थित भाई-बहनों से यही कहना है कि जहाँ-जहाँ से भी वे आये हैं, वहां लौटने पर ईश्वरीय ज्ञान योग को अच्छी तरह समझकर दिव्य गुणों की धारणा अवश्य करें।

विश्व शान्ति के लिए घोषणा पत्र तथा आचार एवं व्यवहार संहिता

जो सर्व सम्मति से पारित हुआ

विश्व शान्ति महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले हम ४० देशों के लोग, जो कि कोटि-कोटि जनता की आकांक्षाओं, आशाओं और विश्वासों को ध्वनित करते हैं, सभी की जानकारी के लिए घोषणा करते हैं कि—

(१) संसार की सभी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं, चाहे वे जिस भी रूप में हमारे सामने हों और उन्हें जिस भी नाम से जाना जाता हो और उन से लोगों को भी जो भी कष्ट या दुःख होते हों, किसी-न किसी नैतिक नियम के उल्लंघन से, या सदाचार सम्बन्धी किसी त्रुटि से, अथवा मनुष्य के प्रति, घटनाओं एवं परिस्थितियों के प्रति या संसार के स्वरूप के प्रति गलत दृष्टिकोण अपनाने से अथवा ऐसे गलत ईरादों, अशुभ भावनाओं या प्रदूषित विचारों से ही उत्पन्न होती हैं जो कि अन्तरात्मा (अन्तरचेतना) के, दूसरों के कल्याण एवं हित के अथवा उनके प्रति सदाशय के विरुद्ध होते हैं।

(२) सभी प्रकार के युद्धों और अन्य सभी प्रकार के आक्रमणों एवं लड़ाई-झगड़ों का कोई-न-कोई मानसिक ही कारण होता है जो कि घृणा, क्रोध, बदले की भावना, संदेह और भय, लोभ, राज्य-क्षेत्र विस्तार, प्रभाव-क्षेत्र विस्तार, सीमोल्लंघन या साम्राज्यवाद आदि में से किसी-न-किसी प्रदूषित विचार ही का रूप लिये होता है। इन सभी मानसिक विकृतियों की रोकथाम या इन कारणों का उन्मूलन केवल कानून बना कर ही नहीं किया जा सकता, बल्कि मानसिक परिवर्तन, आत्म-नियन्त्रण और सर्जनात्मक गुणों को धारणा के अभ्यास से ही इनको दूर किया जा सकता है।

(३) सभी आर्थिक वर्ग-संघर्ष, गरीबी, अनाहार-पीड़न,अपर्याप्त एवं अपौष्टि भोजनोत्पन्न अस्वस्थता, बन्धुआ मजदूरी, मजदूरों को कम वेतन देने या उनसे अधिक काम लेने की कुरीतियाँ, या अस्वस्थता-उत्पादक व्यवसायों में स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी व्यवस्था न करने की नीति का कारण आर्थिक शोषण की भावना है, जो कि स्वार्थपरता, संकुचित दृष्टिकोण, किसी भी तरह केवल आर्थिक लाभ की प्रमुखता देने की नीति दूसरों के प्रति उदारता, शुभ भावना और शुभ कामना के अभाव तथा मनुष्य की वैयक्तिक गरिमा के प्रति भावना की कमी पर आधारित हैं। ये सभी कमियां, बुराइयां या अपने मानव बन्धुओं के प्रति मनुष्य के नैतिक कर्त्तव्य-बोधव की भावना को जाग्रत करके, अन्तरात्मा की आवाज को बलवती बनाकर, और सहानुभूति, करुणा, उपकार-भावना, सहायता तथा सहयोग की भावना का संचार करके ही दूर की जा सकती हैं।

(४) जन-संख्या में तीव्रगति से होने वाली वृद्धि का मूल कारण यह है कि व्यक्ति में वासना-वृत्ति पर नियन्त्रण की कमी है, और इस प्रकार अतिवृद्धि से होने वाले सामाजिक-आर्थिक दुष्परिणामों तथा अपने और समाज के नैतिक स्वास्थ्य को पहुंचने वाले आघातों के प्रति अज्ञानता में है। इन कारणों का निवारण ज्ञान से तथा सर्जनात्मक शक्ति के मार्गान्तरीकरण एवं दिव्यीकरण से ही हो सकता है।

(५) समाज में अनेकानेक झगड़े, न्यायिक विवाद पर्यावरण-प्रदूषण प्रवृत्ति, व्यक्ति के अभिमान, असहिष्णुता, अहंकारात्मक मनोवृतियों आदि के कारण हैं। इस प्रकार, इन मनोवृत्तियों का कारण मनुष्य में इस अनुभूति का अभाव है कि इस विराट विश्व में उसका क्या स्थान है और उसका अन्तिम लक्ष्य क्या है और कि उसका आदि एवं मूल स्वभाव तो दिव्य है।

(६) जातीय भेद-भाव, जाति-पांति की संकीर्णता उग्र राष्ट्रवाद के दोष तथा एकता एवं मेल-मिलाप विरोधी अन्य प्रवृत्तियां इस कारण हैं कि व्यक्ति की चेतना देश-कालात्मक इहलौकिकता एवं भौतिकता में

अत्याधिक उलझ गयी है। इसका संशोधन व्यक्ति को उसकी पारलौकिक सत्ता के प्रति सचेत करने से और समूचे मानव-परिवार का आध्यात्मिक नाते से एक सदस्य होने के नाते एकता का बोध कराने से हो सकता है।

(७) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर या किसी देश में या किन्हीं संस्थाओं, समाजों या संगठनों के बीच या व्यक्तिगत रूप से किसी के मन में तब तक सच्ची और स्थायी शान्ति नहीं हो सकती जब तक कि वे नैतिक नियमों का उल्लंघन करते रहेंगे और आध्यात्मिक भ्रातृत्व एवं प्रेम के सम्बन्ध को या मानवता की भावना को भंग करते रहेंगे।

(८) शान्ति, सौहार्द्र और एकता के युग का आगमन तभी हो सकता है जब जन-जीवन नैतिक दृष्टि से स्वच्छ और मानसिक दृष्टि से संतुलित और तनाव-रहित बने, जन-मन में एक-दूसरे के प्रति सदा कल्याण की कामना हो और सहयोग, सहायता तथा आध्यात्मिक भ्रातृ-भावना हो और ये सब तभी हो सकते हैं जब आत्मा निश्चय बुद्धि होने से सभी स्वयं एक परमपिता के वत्स मानते हुए विश्व भ्रातृत्व के नाते से जीयें।

(९) विश्व में शांति तभी हो सकती है जब मानवों के व्यक्तिगत जीवन में शान्ति हो और व्यक्तिगत जीवन में पूर्ण तथा स्थायी शान्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि समस्त मानव जाति में तथा सारे वातावरण में शान्ति न हो अतः हर व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह अपने मन में शान्ति धारण करते हुए वातावरण में, जगत में, राष्ट्रों के बीच तथा संस्थाओं के बीच शान्ति की स्थिति पैदा करने में निमित्त बने और संस्थाओं, संगठनों तथा राष्ट्रों का यह कर्त्तव्य है कि वे व्यक्ति तथा जगत में शान्ति बनाये रखने में योगदान दें।

(१०) उपरोक्त सभी बातों को मन में रखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में धार्मिक संस्थाओं या समुदायों के बीच, अन्य संगठनों के तथा व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों में शान्ति को बनाये रखने तथा बढ़ावा देने के लिए तीन प्रकार के व्यवहार-नियम अथवा आचार-संहिताएं बनाई हैं जो कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, व्यावसायिक जीवन में तथा व्यक्तिगत रूप के व्यवहार में आचरण का आधार माने जायेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में शान्तिपूर्ण आचरण के नियम

जब कि हम यह जानते और मानते हैं कि आज ऐसे अस्त्रों-शस्त्रों का संग्रह हो चुका है जिनसे विश्व का कई बार विनाश हो सकता है।

जब कि हम यह मासूस करते हैं कि आज लड़ाई इतनी भयानक और विध्वंसात्मक हो चुकी है जितनी कि पहले कभी नहीं थी और कि आज उसका रूप इतना विकाल हो चुका है कि वह सारे विश्व को ही विनाशाग्नि में धकेल सकता है।

जब कि हम यह भी भली प्रकार समझते हैं कि पड़ौसियों से प्रेम और भ्रातृत्व के आधार पर अच्छे सम्बन्ध बनाना, उग्र हथियारों को बहुत मात्रा में संचित करने के व्यय-भार से कहीं ज्यादा अच्छा है।

जब कि यह भी सर्व-विदित है कि युद्धों से तो नई समस्याएं उपजती हैं और नई दुश्मनी तथा वैमनस्य एवं मनमुटाव पैदा होते हैं।

जब कि हम यह भी मानते हैं कि अब जो धन अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण पर खर्च हो रहा है, उसे निरक्षरता, अज्ञानता, दरिद्रता, रोग आदि को दूर करने तथा निर्बल वर्गों को सहायता देने पर खर्च करना ज्यादा अच्छा है।

जब कि हम यह समझते हैं कि हमारा यह स्वप्न कि विश्व में शान्ति तथा समृद्धि हो तभी साकार हो सकता है जब इस में पवित्रता, सचरित्रता अथवा नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना हो और व्यक्ति का दृष्टिकोण बदले ताकि हर कोई मानव समाज को अपना एक वृहद कुटुम्ब माने।

इसलिए अब,

हम विश्व के राष्ट्र अथवा देश, अपने संवैधानिक प्रतिनिधि द्वारा

इस नैतिक व्यवहार, कार्य एवं आचार संहिता को अथवा विश्व शान्ति के इस चार्टर को घोषित करते हैं और इसमें दी गई नियमावलियों को राष्ट्र

अथवा देशों के पारस्परिक कार्य-व्यवहार के लिए अपनाते हैं और यह दृढ़ संकल्प करते हैं कि अन्य जो राष्ट्र या राज्य हैं उनद्वारा भी इन नियमावलियों को मान्यता दिलाने के लिए हम प्रयत्नशील रहेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए नियमावली

नियम—१ : हम सदा इस बात को ध्यान में रखेंगे कि सम्पूर्ण मानव-जाति का कल्याण हमारा सर्वप्रथम और सर्वोपरि लक्ष्य है। हमारी समस्त राष्ट्रीय नीतियाँ, सारे कार्य और सभी लक्ष्य इस सर्वोच्च सिद्धांत से निर्देशित होंगे और सभी के प्रति सद्भावना का हम कभी भी परित्याग नहीं करेंगे।

नियम—२:दूसरे राष्ट्रों के साथ हमारे सम्बन्ध ऐसे होंगे जैसे भाईयों और बहिनों के बीच होते हैं और वे एक दूसरे की उन्नति तथा विकास के लिए प्रेम, सहयोग तथा सहायता पर आधारित होंगे।

नियम—३ : हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहन देने के कार्य को उचित स्थान और महत्त्व देंगे और सभी व्यवसायों के लोगों जिनमें राजनीतिज्ञों का व्यवसाय भी सम्मिलित है, को भी इस बात के लिए प्रोत्साहित करेंगे कि वे एक नैतिक आचार संहिता को स्वीकार करें और एक ऐसा संगठन बनाएं जो इस बात का निरीक्षण करे कि उन नियमों का पालन हो रहा है या नहीं और उस व्यवसाय के लोगों को उन नैतिक नियमों से परिचित कराएं तथा जो व्यक्ति उन नैतिक नियमों का पालन नहीं करते उनके बारे में वांच्छित कदम उठायें।

नियम—४:हम दूसरे देशों के साथ आपसी विवादों को बात-चीत, लेन-देन, किसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के द्वारा बीच बिचाव एवं निर्णय के द्वारा अथवा न्यायिक विधि द्वारा सुलटाएंगे और न सैनिक बल का प्रयोग करेंगे न इसके लिए धमकियाँ देंगे न ही इतिहास की पूर्व उत्तेजनादायक घटनाओं के आधार पर घृणा तथा बदले की भावना रखेंगे।

नियम—५ : हम अपने राष्ट्रहितों का ध्यान रखते हुए दूसरों का भी ध्यान रखेंगे और हमारी राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या सुरक्षात्मक व्यवस्था अथवा हमारे विधि-विधान अथवा संगठन-संस्थान ऐसे होंगे जो समुचित विश्व के कल्याण के विरोधी या बाधक नहीं होंगे और इसलिए, हम किन्हीं देशों के विरुद्ध अन्य देशों से सैनिक गठ-जोड़ या सुरक्षात्मक समझौते नहीं करेंगे और यदि अब भी हमने ऐसे गठ-जोड़ या समझौते किये हुए हैं तो हम सभी से मित्रता, भ्रातृत्व या निष्पक्षता के नाते के लिए प्रयत्न करेंगे।

नियम—६:हम सारभौम प्रेम को मानव पर लादे गए कानून से बहुत उच्च मानते हैं, सहनशीलता, सद्भावना और एक दूसरे को समझने-समझाने की नीति को सामना या लड़ाई करने की नीति से श्रेष्ठ मानते हैं और मित्रता या भ्रातृत्व की भावना को शस्त्र नीति से महान समझते हैं और रचनात्मक शान्ति युक्त मौन को वाचाल एवं शब्दतुरता से अच्छा गिनते हैं और इसलिए, हम अपने विधान, प्रशासन तथा न्याय सम्बन्धी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले कुछ समय मौन मनन अथवा ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास किया करेंगे ताकि हमारे विधान प्रशासन व न्याय सम्बन्धी कार्य में पूर्वोक्त गुणों का समावेश हो।

नियम—७:हमारी सैनिक व्यवस्था केवल देश की आंतरिक सुरक्षा के हेतु तथा शान्ति एवं वैधानिक स्थिति को बनाए रखने के लिए होगी और हम इस बात के लिए पूर्णतः प्रयत्नशील रहेंगे कि जैसे-जैसे हमारे सम्बन्ध दूसरे देशों से अच्छे और सुदृढ़ होते जायेंगे और हमारे देशवासी अधिक शान्त एवं स्वतः अनुशासनजीवी होते जावेंगे वैसे-वैसे हम सुरक्षात्मक दल-बल को कम करते जायेंगे।

नियम—८:हम अपनी आय में से पहले जितना खर्च सैनिक मुद्दों पर करते थे उसका कुछ भाग लोक कल्याण कार्यों, निर्बल एवं असाहय वर्गों की सहायता तथा बच्चों एवं युवा वर्गों की नैतिक एवं सदाचार सम्बन्धी शिक्षा पर लगायेंगे।

नियम—९:हम मानवी अधिकारों को तत्सम्बन्धी कर्त्तव्यों के परिपेक्ष्य में प्रोत्साहन देंगे और जिस नियम का पालन करते हुए हर व्यक्ति, संस्था अथवा समूह के विचार, विश्वास अभिव्यक्ति, धर्म, संस्कृति तथा व्यवसाय सम्बन्धी ऐसे अधिकारों को मान्यता एवं संरक्षण देंगे जो कि सार्वजनिक ताल-मेल और

शान्ति के या सभ्यता को भंग करने वाले नहीं होंगे और हम इस बात पर ध्यान देंगे कि भेद-भाव, झगड़े, दंगे या हिंसा को उत्तेजक करने वाली घटनायें न घटें और हम देशवासियों के सुरक्षा के लिए ऐसी व्यवस्था करें कि जिससे उन पर अत्याचार न हो और उनसे अमानुषी एवं पतनकारी व्यवहार न हो न ही उन्हें दंड देने की बर्बरता की जाय।

नियम -- १० हम अज्ञान तथा अपराध को, निर्धनता, भूख, और रोग को, फूट, भेद-भाव पैदा करने तथा हिंसा पैदा करने वाली प्रवृतियों को, एक देश द्वारा दूसरे देश को उनके खनिज पदार्थों सम्बन्धी सागर सम्पति सम्बन्धी और प्राकृतिक सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकारों को न देने की प्रवृति को, उद्योगों, तकनीकी उपकरणों या अन्य कारणों से पर्यायवरण प्रदूषण के कार्यों को, तथा शीत युद्ध या उग्र युद्ध की ओर ले जाने वाले कार्यों को मानव जाति के मुख्य शत्रु मानेंगे और शिक्षा तथा समाज परिवर्तन द्वारा आर्थिक असमानताओं को कम करने और अन्ततोगत्वा निर्धनता तथा अनाहार स्थिति को शिक्षा सहायता, अधिकाधिक नये सवेतन एवं समाजोपयोगी धन्धों को बढ़ावा देने के द्वारा तथा रचनात्मक और विकासकारी प्रयत्नों द्वारा तथा मित्रता, ताल-मेल जान-पहचान नैतिक सुझाव और निजी उदाहरण के द्वारा लड़ाई सम्बन्धी कार्यों को हटाने या समाप्त करने का प्रयत्न करेंगे।

व्यावसायिकों की आचार-संहिता के लिए मौलिक नियम

यह मानते हुए

(i) कि किन्हीं व्यावसायिक कर्त्तव्यों का पालन न करने से उन व्यक्तियों में, जिनसे कि व्यवसायिक सम्बन्ध होता है, असन्तुष्टता, और मनमुटाव का भाव पैदा होता है और सम्बन्धों में अप्रसन्नता अथवा कटुता आती है;

(ii) कि अनुचित, अयोग्य, कपटपूर्ण या भ्रष्टाचारयुक्त व्यवहार एवं साधनों से लोगों की निगाह में उस व्यवसाय को हीन स्थान मिलता है और उस व्यवसाय का अन्य व्यवसायों से सम्बन्ध होने के कारण सारे समाज का नैतिक स्तर गिरने लगता है और इसके परिणामस्वरूप उस व्यवसाय को करने वाले स्वयं उस व्यक्ति को अपनी अन्तरात्मा पर एक बोझ महसूस होता है;

(iii) कि एक मर्यादा, सुव्यवस्था और शान्ति पूर्ण समाज का निर्माण तभी हो सकता है जब उस समाज के लोग सुदृढ़ता से नैतिक नियमों का पालन करते हों।

(iv) कि यह किसी व्यवसाय के लोगों के अपने ही हित में है कि उनके सामने उच्च लक्ष्य हो, महान उद्देश्य हो और श्रेष्ठ कर्त्तव्य हों।

(v) कि यह व्यक्ति की अपनी मानसिक शान्ति और आध्यात्मिक सन्तुष्टता के हित में है कि वह दूसरों के साथ अपने व्यवहार में नैतिक नियमों और मर्यादाओं का पालन करे।

यह व्यावसायिक संस्था

(१) निश्चय पूर्वक मानती है कि उसके सभी सदस्यों के लिए एक आचार संहिता की आवश्यकता है।

(२) इस बात को भी गम्भीरतापूर्वक मानती है कि प्रादेशिक स्तर पर अथवा सार्वदेशिक स्तर पर इस व्यवसाय के लोगों से बनी एक ऐसी समिति की आवश्यकता है जिसका यह कर्त्तव्य हो कि इसकी आचार संहिता के वास्तविक अर्थ के बारे में निर्णय करे जिन लोगों के बारे में इसका उल्लंघन करने की शिकायत हो, उनके बारे में बात की छानबीन करे, और जिन पर आरोप है, उन्हें उत्तर देने का अवसर दे और इसके बाद जो निर्णय वह करे उसे वह प्रादेशिक या सार्वदेशिक पत्र में प्रकाशित करे। और जिसे यह अधिकार भी हो कि वह किसी व्यक्ति को आगे के लिए ऐसे कार्य न करने की आज्ञा दे सके और यदि वह उस आज्ञा का उल्लंघन करे तो वह न्यायालय द्वारा उस पर रोक लगवाये या इसके कार्यों को गलत करार दिलाये और या स्वयं द्वारा दी गई आज्ञा पर न्यायालय का विचार लें।

और, इसलिए, हम आचार-संहिता बनाने के लिए निम्नलिखित मार्ग दर्शन रूप नियमों को स्वीकार करते हैं।

नियम १ हम अपने व्यवसाय को समाज की दी हुई एक अमानत मानते हैं और हम समाज के हितों को तथा कल्याण को सदा प्राथमिकता देंगे।

अतः जहाँ हम अपने हित की पूर्ति के लिए प्रयत्न करेंगे, वहाँ हम निश्चय ही नैतिक नियमों का भी साथ-साथ पालन करेंगे।

नियम—२:जिनकी हम व्यावसायिक सेवा करेंगे, उनके प्रति हमारी अशोषण की प्रवृत्ति बनी रहेगी अर्थात् यदि हम राजनीतिज्ञ हैं तो जनता के प्रति, यदि हम प्रसार-साधनों के प्रतिनिधि हैं तो समाज के प्रति, यदि हम अध्यापक हैं तो शिक्षार्थियों के प्रति, यदि हम डाक्टर हैं तो रोगियों के प्रति और यदि हम व्यापारी हैं तो खरीदारों के प्रति हमारी प्रवृत्ति शोषणात्मक नहीं होगी। बल्कि हमारे मन में समाज की सेवा का भाव, और समाज के शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक व आध्यात्मिक जीवन को सुदृढ़ बनाने का भाव सर्वोपरि होगा और इसलिए हम कोई भी ऐसा कार्य नही करेंगे जिससे हमारे समाज के इस चतुर्दिक स्वस्थ विकास को क्षति पहुँचे। जिस समाज के हमारा व्यवसाय, हमारे मित्र और हमारे सम्बन्धी भाग हैं।

नियम—३:अपने व्यवसाय से सम्बन्धित हम केवल ऐसे ही कार्य करेंगे जिन द्वारा इस व्यवसाय को करने वाले साथियों का नाम खराब न हो।

नियम—४: हम अपनी व्यावसायिक सेवा के स्तर को दायित्व, ईमानदारी, सच्चाई तथा सफाई के द्वारा ऊँचा बनाए रखेंगे।

नियम—५: हम अपने व्यवसाय के दूसरे लोगों से और अन्यान्य व्यावसायिक संस्थाओं तथा उनके सदस्यों से वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा कि हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ करें।

नियम—६:हम अपना व्यावसायिक कर्त्तव्य निभाने के लिए हर व्यक्ति को सन्मान देंगे और उसके साथ बहन या भाई की तरह का व्यवहार करेंगे और उसके साथ सहयोग, सहानुभूति और सहायता का व्यवहार करेंगे।

नियम—७: हम अपने भेदों या विवादों का हल शान्ति पूर्वक रीति से करेंगे और शारीरिक अथवा शाब्दिक हिंसा का प्रयोग नहीं करेंगे।

नियम—८:हम व्यक्ति को दुःख की स्थिति में देख कर दया, सद्भावना और करुणा के स्तर पर कार्य करेंगे और गरीब, शरणार्थी, शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से अपाहिज, वृद्ध, रोगी तथा बच्चों पर विशेष ध्यान देंगे और इनके साथ विशेष कोमलता बरतेंगे।

नियम—९: हम अपनी आय का कुछ भाग समाज के कमजोर, गरीब, साधन रहित और अद्व लित वर्गों की भलाई के कार्यों पर और शान्ति की स्थिति को बनाये रखने के लिए खर्च करेंगे।

नियम—१०:हम अपने निजी लाभ के लिए, अपने व्यावसायिक सम्बन्धों में तालमेल व शान्ति बनाए रखने के लिए और समाज में शान्ति की तरंगे फैलाने के लिए प्रतिदिन कुछ समय मौन-युक्त मनन अथवा ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास करेंगे।

नियम—११: हम अपना व्यावसायिक कार्य करने के लिए कैसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे कि समाज में घृणा, हिंसा, अश्लीलता, बेईमानी, विवेक-शून्यता इत्यादि दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिले या महिलाओं, पुरुषों अथवा अन्य किसी वर्ग को समाज की निगाह में हीन स्थान देने की भावना हो या जिससे समाज में अशान्ति फैले या तनाव पैदा हो।

व्यक्तिगत जीवन में शान्ति के लिए नियम

यह मानते हुए

(i) कि हर व्यक्ति के मन की अवस्था अन्य व्यक्तियों की मानसिक स्थिति से प्रभावित होती है,

(ii) कि विचार तरंगें शक्तिशाली होती हैं और वे हमारे वातावरण तथा विश्व को प्रभावित करती हैं।

(iii) कि अब भी संसार में बहुत तनाव, वैमनस्य, विरोध और अशान्ति है और इस कम करने में तथा संसार में शान्ति की पुनर्स्थापना में हर व्यक्ति योगदान दे सकता है।

(iv) कि हमारे कर्म न केवल हमारे लिए शान्ति और सुख का या अशान्ति और दुःख का कारण बनते

हैं बल्कि दूसरों पर भी उनका सुख-दुःखात्मक प्रभाव पड़ता है।

(v) कि इस संसार में एक शाश्वत नैतिक नियम का प्रचलन और 'कर्म तथा फल' का सिद्धान्त आध्यात्मिक क्षेत्र में अटल है; उसके अनुसार कोई भी व्यक्ति अपने कर्म के फल से इस जीवन में या अगले जीवन में नहीं बच सकता।

(vi) कि शान्ति और हर्षोल्लास के बिना यह जीवन नीरस और बोझिल है और शान्ति तभी होती है जब व्यक्ति पवित्रता और सद्व्यवहार का पालन करता है और अपनी अन्तश्चेतना के विरोध की स्थिति उत्पन्न नहीं करता है।

(vii) कि व्यक्ति की आदिम एवं मूल मानसिक स्थिति अपकार, घृणा, द्वेष, प्रतिरोध की भावना, हिंसा या आक्रमण-प्रवृत्ति इत्यादि से मुक्त थी और आध्यात्मिक शान्ति से युक्त थी।

(viii) कि व्यक्ति की चेतनता और नैतिक सत्ता शरीर से अलग है और इसे आत्मा, सोल, रूह आदि नाम दिए जाते हैं।

मैं यह दृढ़संकल्प करता हूं कि—

मैं निम्नलिखित आचार संहिता का निजी शांति और विश्व शांति के हेतु पालन करूँगा—

नियम १ : मैं सभी भौतिक वस्तुओं को परिवर्तनशील, क्षणभंगुर तथा नाशवान समझूँगा और इन्हें जीवन का ध्येय न मानकर केवल साधनमात्र समझूंगा। मैं नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि मानूँगा तथा नैतिक उन्नति को अपने कल्याण के लिये, जनता की भलाई के लिये तथा और शान्तिमय समाज की स्थापना के लिये आवश्यक मानूँगा।

नियम २ : मैं स्वयं के बारे में इस स्मृति में रहूँगा कि मैं आत्मा हूँ और दूसरों को भी इस दृष्टि से देखूँगा कि स्व-स्व शरीर में वे भी वास्तव में आत्मा हैं और मेरे आत्मिक भाई हैं।

नियम ३ : मैं इस निश्चय में स्थित रहूंगा कि नैतिकता, शान्ति और सार्वभौम प्रेम आदि की दृष्टि से सभी आत्माओं से श्रेष्ठ एक परमात्मा हैं जो कि सभी आत्माओं के मात-पिता हैं और सभी को प्रेम, मार्गप्रदर्शना, ज्ञान और सुख तथा शान्ति की पैतृक सम्पत्ति देने वाले हैं।

नियम ४ : मैं परमात्मा को अपना परमप्रिय अविनाशी माता-पिता मानते हुए, उसकी प्रेमपूर्वक स्मृति में स्थित रहने का अभ्यास करूँगा और उसे ही नैतिक नियमों का आदि एवं मूल स्त्रोत और सर्वोच्च आदर्श एवं अधिकारी मानूँगा।

नियम ५ : मैं अपनी दिनचर्या का आरम्भ और अन्त कम-से-कम तीन मिनिट मौन ईश्वरीय स्मृति में स्थित होकर करूँगा ताकि मेरे मन के संकल्प और दूसरों के प्रति मेरा व्यवहार पवित्र एवं शुभ बना रहे।

नियम ६ : मैं प्रतिदिन कुछ-न-कुछ ईश्वरीय वाक्यों का श्रवण या अध्ययन किया करूँगा जिनसे मेरी नैतिक चेतना, मेरी अन्तरात्मा, मेरा मनोबल सुदृढ़ बने रहें और मेरा मन दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक पविता की ओर बढ़े।

नियम ७ : मैं दूसरों के भी सद्गुणों ही की ओर देखूँगा और सदा शुभ एवं पवित्र ही संकल्पों करूँगा तथा रचनात्मक ही दृष्टिकोण का प्रयोग करूँगा, और मैं सहनशीलता, धैर्य, नम्रता, मित्रता, मधुरता, शान्त स्वभाव, गुणग्राहकता, ईमानदारी, निष्पक्षता, न्यायशीलता, निश्च्छलता और निर्मलता को धारण करने का पूरा पुरुषार्थ करूँगा तथा मन में घृणा, शत्रुता, बदले की भावना, हिंसा, निन्दा इत्यादि को स्थान नहीं दूँगा।

नियम ८ : मैं अपने आप में और अपने प्राकृतिक वातावरण के साथ तथा अपने पड़ोसियों, सहकारी व्यक्तियों और अन्य सभी के साथ भी तालमेल और स्नेह-सम्बन्ध बना कर रखूँगा और किसी के साथ भी वचन या कर्म से हिंसात्मक या विध्वंसात्मक व्यवहार नहीं करूँगा।

नियम ९ : मैं अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में दूसरों के अधिकारों को और उनकी भलाई तथा शान्ति को अपने मन में सर्वोपरि स्थान दूँगा।

नियम १० : मैं अपनी समस्याओं को हल करने के लिये कानून की अपेक्षा सबके प्रति प्रेम-भाव को तथा बाह्य साधनों की अपेक्षा आत्मानुशासन एवं संयम को श्रेष्ठ मानकर कर्म करूँगा और अन्य मानव-बन्धु सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये जो पुरुषार्थ कर रहे हैं उसमें उनके प्रति सद्भावना, सहानुभूति और सहयोग का व्यवहार करूँगा।

विश्व शान्ति के लिये दस नियम
अथवा
दस शील

नीचे संक्षेप अथवा साररूप में उन दस नियमों का उल्लेख है जिन्हें अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, धार्मिक संगठनों के बीच सम्बन्धों और व्यावसायिक सम्बन्धों में तथा निजी जीवन में व्यवहृत करने से शान्ति बनी रह सकती है :—

१. हम सच्चाई, ईमानदारी और न्यायशीलता से अपना व्यवसाय या कार्य करेंगे और हमारे कर्म हमारे वचनों के अनुसार होंगे।

२. दूसरों के साथ हमारे जो लेन-देन या व्यवहार होंगे, वे दुराग्रह, घृणा, अभिमान और सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक, जात्यात्मक या अन्य किसी भी प्रकार के शोषण से रहित होंगे।

३. सार्वभौम प्रेम, सहानुभूति, सद्भावना, सहयोग और शान्ति बनाये रखने की भावना अथवा 'पवित्र बनने और भलाई करने' के भाव हमारे सभी कर्मों, व्यवहारों अथवा आचरणों के मूल प्रेरक एवं पथप्रदर्शक होंगे।

४. हम ऐन्द्रिय या वासनात्मक सुखों के गुलाम नहीं बनेंगे, न ही हम लौकिक सत्ता या पद के पीछे लोलुपता या मदान्धता को अपने मन में नहीं आने देंगे; हम उच्च स्थान को प्राप्त करने के लिये अनैतिक साधनों का प्रयोग नहीं करेंगे न ही हम कभी अपने पद या अपनी शक्ति का प्रयोग किसी नैतिकता-प्रिय व्यक्ति को दुःख या हानि पहुँचाने के लिये या अपने अहंकार की तुष्टि के लिये, अपने किसी विरोधी से बदला चुकाने के लिये या अनुचित एवं अन्यायसंगत लाभ उठाने के लिये प्रयोग करेंगे। दूसरे शब्दों में हम केवल नैतिक-संगत ध्येयों की प्राप्ति के लिये नैतिकता-युक्त ही साधनों एवं विधियों का प्रयोग करेंगे।

५. हम अपने विवादों को बातचीत, मध्यस्थता, समझौते, बीचबिचाव, किसी निर्णायक द्वारा निर्णय या कानूनी तरीकों से हल करेंगे और वाणी या कर्म से हिंसा या शारीरिक अथवा मानसिक अन्याचार एवं पीड़ा के तरीकों को नहीं अपनायेंगे।

६. हम संसार से जो लाभ लेते हैं, उसके लिये हम संसार को देंगे भी, और हम इतना नहीं लेंगे कि दूसरे अपने अधिकार से वन्चित रह जायें बल्कि हम उतना ही लेंगे जितने पर हमारा न्यायपूर्ण अधिकार है।

७. हम संसार को स्वास्थ्य, सम्पदा, सुख, स्वतन्त्रता, और भ्रातृत्व की भावना से भरपूर बनाने के लिये अपना दायित्व निभायेंगे और इसके लिये पूरी सावधानी बरतेंगे तथा पूरा पुरुषार्थ करेंगे कि हमारे द्वारा पर्यावरण प्रदूषित न हो, न प्राकृतिक सन्तुलन बिगड़े, न ही हमारे अन्य जीव-प्राणियों के साथसम्बन्ध बिगड़ें, यहाँ तक कि हमारे अपने मन और अपनी अन्तरात्मा में भी तालमैल न बिगड़े।

८. हम निर्बलों, अपाहिजों, निर्धनों, अशान्ति या दुःखी लोगों की सहायता करेंगे और ऐसे अज्ञान के निवारण के लिये जिससे कि संसार में अनैतिकता या अनाचार पैदा होती है, ये ऐसे आलस्य, प्रमाद, व्यसनों एवं आदतों जिनसे कि शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक गरीबी पैदा होती है, और ऐसे रोग जो कि शरीर, समाज या आत्मा को रुग्ण बनाते हैं, के निवारण के लिये अपनी आय में से कुछ बचायेंगे तथा खर्च करेंगे।

९. हम प्रतिदिन आत्म-निरीक्षण, ज्ञान-मनन, मौन ईश्वरीय स्मृति या दिव्यचिन्तन तथा नैतिक-आध्यात्मिक अध्ययन पर कुछ समय खर्च करेंगे ताकि हमारी नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति हो।

१०. हम दूसरों के गुणों को देखेंगे और अपने आदिम एवं मूल शान्त एवं दिव्य स्वरूप में स्थित रहेंगे और सभी मानवात्माओं को प्रिय भाई तथा परमात्मा को परमप्रिय माता-पिता के रूप में जानेंगे, मानेंगे और तदानुसार ही व्यवहार करेंगे।

नेपाल राष्ट्र बैंक के गवर्नर महोदय तथा उनकी पत्नी को चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र० कु० शीला

करौली में शिवदर्शन प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० राज, राजस्थान के भूतपूर्व यातायात मन्त्री भ्राता शिवचरण सिंह को साहित्य भेंट करती हुई

लखनऊ में शिवरात्रि के उपलक्ष में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर पर जे. एस. मिश्रा जी, दादी भगवती तथा अन्य।

चन्द्रपुर सेवा केन्द्र द्वारा किए गए शिवरात्रि कार्यक्रम में बोलते हुए भ्राता रमणीक लाल चवान जी, साथ में ब्र० कु० कुसुम, ब्र० कु० सिंहजीनया तथा भ्राता अशोक जी बैठे हैं।

विश्व शान्ति सम्मेलन का चार्टर सत्र

विश्व शान्ति महा सम्मेलन के अन्तर्गत १३ फरवरी १९८३ को एक विशेष अधिवेशन हुआ जिसमें चार्टर प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में संयुक्त राष्ट्र-संघ के असिस्टेन्ट सेक्रेटरी डा० राबर्ट मूल्लर, संयुक्त राष्ट्रसंघ की यूनिवर्सिटी फार पीस काउन्सिल के अध्यक्ष भ्राता रोड्रियो कारजो ओडियो, नियोटिक साइन्स इंस्टिट्यूट, सेनफ्रांसिस्को के डा० विल्लिस हरमन ने भाग लिया। वह चार्टर ग्याना के उप-राष्ट्रपति भ्राता स्टीव नारायण द्वारा प्रस्तुत किया गया। तथा नेपाल के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री भ्राता नग्रेन्द्रप्रसाद रिजाल ने अनुमोदन किया। इसका उद्देश्य मानव द्वारा अपनी दैनिक दिनचर्या में नैतिक सिद्धान्तों को अमल में लाना है। इस चार्टर को मूल रूप से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने तैयार किया है।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए माननीय डा० राबर्ट मुल्लर ने कहा कि मेरे जीवन का यह दूसरा सर्वोत्तम अवसर है, जब मैं भारत की पवित्र भूमि पर आया हूं। और अब पवित्र आबू पर आया हूं। जहां फरिश्ते स्वरूप देवियां ब्रह्माकुमारियां रहती हैं। मैं इस बात से भी अति प्रसन्न हूं कि हम सब यहां यूनिवर्सल लाज़ (सार्वभौम नियमों) की खोज कर रहे हैं और इसी हेतु यह चार्टर प्रस्तुत किया गया है। जोकि विश्व में शान्ति स्थापना में सहायक होगा। मैं यह भी प्रसन्नतापूर्वक बताना चाहता हूं कि इन ब्रह्माकुमारियों से ढाई वर्ष पूर्व भेंट हुई थी और अब यू० एन० ओ० के इतिहास में पहली बार किसी आध्यात्मिक संस्था को इसकी गैर सरकारी समिति का सदस्य बनाया गया है और इस विश्व-विद्यालय की ओर से ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन इसका कार्य देखती हैं।

उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व जस्टिस भ्राता वी० आर० कृष्णा अय्यर ने अपने सन्देश में कहा कि यहां स्वर्ग और धरती का मिलन हो रहा है। स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि यह मिलन पवित्र आत्मा और शरीर का है। युद्ध मनुष्य के मन में जन्मता है। अतः हमें उसे जड़ से ही सुधार करना होगा और यह चार्टर विश्व में शान्ति लाने के लिए ऐसा ही प्रयत्न है।

गुजरात सरकार के हरिजन कल्याण विभाग के उपमंत्री भ्राता ललित भाई परमार ने अपने सन्देश में कहा कि यह मानव जीवन को सुधारने के लिये बिलकुल नया तरीका है। शान्ति की शक्ति के द्वारा विश्व में निश्चित रूप से शान्ति लायी जा सकती है। आज का मनुष्य धन की शक्ति के पीछे पागल हो रहा है। ऐसे समय में विश्व को विनाश से बचाने के लिए यह चार्टर सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न है। मैं इसका हृदय से अनुमोदन करता हूं।

"प्यूरिटी" एवं "ज्ञानामृत" के प्रधान सम्पादक भ्राता जगदीशचन्द्रजी, जो कि ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य प्रवक्ता हैं और जिन्होंने अब तक लगभग ४५ पुस्तकें परमात्मा द्वारा ब्रह्मा बाबा के माध्यम से बताये गये ज्ञान के आधार पर लिखी हैं, ने चार्टर के विषय में बहुत ही सुन्दर ढंग से व्याख्या की। जिसे बाद में ग्याना सरकार के उप-राष्ट्रपति भ्राता स्टीव नारायण ने पूर्ण विवरण सहित प्रस्तुत किया और कहा कि यह चार्टर निश्चित रूप से ही विश्व में शान्ति स्थापना में अपनी सराहनीय भूमिका अदा करेगा।

नेपाल सरकार के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री भ्राता नगेन्द्रप्रसाद रिजाल ने इस चार्टर के मुख्य-मुख्य बिन्दु रखे।

ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रमुख प्रशासिका राज-योगिनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणी जी ने कहा कि अब सबका सपना साकार हो रहा है। अभी तो दुनिया में एक राज्य, एक धर्म, एक मत, एक भाषा, एक कला की स्थापना होगी हम एक पिता के बच्चों को एक होना ही है।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

न्याय क्षेत्र में आध्यात्मिकता लाएं

न्यायविदों की गोष्ठी में भ्राता वी० आर० कृष्णा अय्यर के विचार

भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश भ्राता वी० आर० कृष्णा अय्यर जी ने न्यायविदों से आग्रह किया कि वे न्याय के क्षेत्र में आध्यात्मिकता को लाएं क्योंकि यदि न्यायाधीश सत्यता की परवाह नहीं करेंगे तो लोगों का न्यायपालिका से विश्वास उठ जाएगा। महात्मा गांधी जी ने भी अपनी जीवन कहानी में स्पष्ट किया है कि वह जब अफ्रीका में वकालत करते थे तो अपने मोवक्किल से यही आग्रह करते थे कि वे कोर्ट में सच बोलें। कानून परिभाषा एवं शब्दों की लड़ाई का कठोर रूप बनकर रह गया है। एक सफल न्यायविद वह है जो दोनों पार्टियों के भेदभाव को समाप्त कराकर एकमत बना दे।

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता गुमनमल लोढा ने न्यायविदों को सजग करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सार्वजनिक असेम्बली द्वारा शान्ति के विषय पर संसार की पांच बड़ी ताकतों को मिली वीटो लगाने के अधिकार पर पुनर्विचार करें। संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से न्याय व कानून न तो अफगानिस्तान में और न ही खाड़ी के देशों में शान्ति स्थापन कर सकता है।

न्यायाधीश लोढा जी ने न्यायविदों से अपील की कि वे विकसित तथा अविकसित देशों का भेदभाव मिटाकर शान्ति स्थापन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को प्रभावित करें। उन्होंने कहा कि एक ओर आणविक अस्त्र-शस्त्रों की होड़ तथा दूसरी ओर शान्ति के लिए युद्ध—यह केवल प्रपंच मात्र है। उन्होंने कहा कि कमजोर तथा अविकसित देशों का बड़े राष्ट्रों द्वारा जो शोषण, दमन, असमानता तथा अन्याय हो रहा है उस पर न्याय तथा कानून की जीत होनी ही चाहिए।

आस्ट्रेलिया की न्यायविद मारगरेट न्यूटन ने कहा कि व्यवसाय के तौर पर न्यायविद सामाजिक क्षेत्र में सहज ही प्रभाव वाली स्थिति की ओर बह जाते हैं।

न्याय विशेषता पर अभ्यास करने वाले प्रतिदिन कई ऐसी झगड़े की स्थितियों में से गुजरते हैं जहां वे शान्ति पूर्ण हल के लिए आवाज़ उठा सकते हैं तथा सत्यता व शान्ति की वास्तविक स्थापना में कानून के अन्दर निहित नैतिक शक्तियों के लिए दिशा निर्देशन भी दे सकते हैं।

जो लोग मनुष्यों के बनाए हुए नियमों से प्यार करते हैं उन्हें परमात्मा के नियमों से तो और भी अधिक प्यार होना चाहिए अर्थात् सारे विश्व में शान्ति, विश्व बन्धुत्व की भावना, स्नेह और पवित्रता हो।

ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लेखक, सम्पादक तथा शिक्षक ब्र० कु० बृजमोहन ने भी पवित्रता तथा कानून का प्रश्न उठाया। उन्होंने कहा कि यदि मन पवित्र है तो यह शुद्ध विचारों और अच्छे कार्यों को जन्म देता है। जब मन दूषित हो जाता है तब सभी चीजें दूषित हो जाती हैं, ऐसी हालत में कानून और न्याय बहुत आवश्यक हो जाता है।

□

(पृष्ठ १० का शेष) **महिला सम्नेलन**

हिलेरी ने कहा कि विश्व में शान्ति तथा विश्व बन्धुत्व की भावना पैदा करने में नारी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पक्ष अदा कर सकती है।

बम्बई से "फैमिना" पत्रिका की सम्पादक बहिन विमला पटेल तथा नैरोबी (केन्या) के शिक्षा-निर्देशक डा० हरमन ओ० कामरा मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने विचारों में कहा कि नारी को अपनी ज़िम्मेवारी समझ कर मानव जाति के उद्धार के लिए अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए।

गयाना के उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी बहिन बैटी नारायण ने कहा कि मानव जीवन के हर दायरे में नारी शक्ति का स्रोत है। एक नारी यदि अपना सम्बन्ध सर्वशक्तिवान, परमपिता परमात्मा से स्थापित करे तो वह इन शक्तियों को प्राप्त कर सकती है।

मुजफ्फरपुर से राजयोग की शिक्षिका ब्र० कु० रानी ने मध्यस्थता का कार्य किया तथा जयपुर से ब्र० कु० पूनम ने सामूहिक योग का अभ्यास कराया।

—: ० :—

(पृष्ठ २१ का शेष) **विश्व शान्ति सम्मेलन का चार्टर सत्र**

ब्रह्माकुमारी संस्था की विदेश सेवा प्रमुख राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी जानकी दादी ने भ्राता राबर्ट मुल्लर की भावभीनी अगवानी ईश्वरीय याद में रहते हुए की, जिससे ओम शान्ति भवन में बैठे सभी भाई-बहनों ने गदगद हृदय से देखा। जानकी दादी ने कहा—बाबा कहते बच्चों, "तुमने देखा मेरा कमाल। तुम्हें सिन्ध की ओम मण्डली से लाकर इस ओम-शान्ति भवन में बिठा दिया। सेवा में लगे रहो, अभी तो तुम्हें सारी सृष्टि को शान्ति का सन्देश देना है और उनके कल्याण के निमित्त बनना है।"

इसी चार्टर के सम्बन्ध में निम्न अन्य प्रमुख जिन व्यक्तियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये, वह इस प्रकार हैं—भ्राता रोड्रियो कारजो ओडियो, संस्थापक यूनिवर्सिटी आफ पीस, साउथ अमेरिका, भ्राता विलिस डब्ल्यू हारमन, नियोटिक साइन्सेज संस्था, सानफ्रासिस्को, भ्राता रमेश शाह, भ्राता जस्टिस कुरेशी, भ्राता बत्रा, भ्राता एन० पी० पटेल, भूत-पूर्व इन्कम टैक्स कमिश्नर, भ्राता मेहरबानसिंह, सेक्रेटरी जनरल, एशियन कान्फ्रेन्स फ़ार रिलीजन एन्ड पीस तथा अन्य।

शान्ति स्थापना करने में प्रचार साधनों का योगदान (पृष्ठ २६ का शेष)

में हिंसा की खबरें पढ़ने से लोगों में बुरी वृत्तियों को ताकत मिलती है। भ्राता विचत्रानन्द खोर मातृभूमि उड़ीसा के सम्पादक ने कहा कि यदि घर में शान्ति स्थापन हो गई तो प्रान्त, देश, संसार में शान्ति हो जायेगी। ब्र० कु० मोहिनी बहन ने कहा कि अखबारों में एक खाना (कालम) शान्ति की खबरों के लिए निश्चित कर देना चाहिये। उन्होंने आस्ट्रेलिया के 'कैनेबरा टाइम्स' का उदाहरण दिया कि इस समाचार पत्र के सम्पादक ने यू. एन. मिडिया पीस प्राइज जीता है। प्रतिदिन इस समाचार पत्र में शान्ति की खबरें छपती हैं, यह अख़बार लोगों में सर्वप्रिय बन गया है।

मन को सूक्ष्म बनाओ

डाक्टर वर्ग वर्कशाप में प्रवचन करते हुए डा० महेन्दीरत्ता जी

डाक्टरों के लिए आयोजित वर्कशाप में चिकित्सा विशेषज्ञों का यही निर्णय थाकि "मन को सूक्ष्म बनाओ।" बैल्जियम में जन स्वास्थ्य के संयुक्त निर्देशक डॉ० देशपांडे जी ने कहा कि मैंने अनुभव किया है कि राजयोग, औषधियों से भी ज्यादा उपयोगी है क्योंकि औषधियों के साइड-इफैक्ट बहुत हैं।

हिन्दू महासभा दिल्ली के अध्यक्ष, डॉ० रूपलाल बतरा ने स्वास्थ्य पर मानसिक विचारों के प्रभाव की व्याख्या करते हुए कहा कि यदि राजयोग द्वारा बुद्धि को व्यायाम न कराया जाए तो बुद्धि अपनी चेतना खो देती है और अधिक व्यर्थ संकल्पों के बोझ से भारी हो जाती है।

यूरोपियन मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ डॉ० सराह ईगर ने जोर दिया कि संकल्प शक्ति विश्व में सबसे अधिक शक्तिशाली है। उन्होंने मानसिक स्वस्थ्यता की आवश्यकता पर भी बल दिया तथा डॉक्टर वर्ग को प्ररित किया कि अपने रोगियों की इस बात का सीखने में मदद करें कि मानसिक तनाव से मुक्त कैसे रहें।

ब्रिटिश विशेषज्ञ डॉ० डेविड गुडमैन ने कहा कि मानसिक तनाव कुष्ठ रोग से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि मानसिक तनाव की बीमारी न हो तो इसके परिणाम बहुत जल्दी सामने आ जाएंगे। इसका समाधान दो बातों में है—एक तो हम दूसरों से यह बीमारी न लें और दूसरे हम अपने मानसिक तनाव का प्रभाव जान-बूझ कर या वैसे भी दूसरों पर न डालें।

बम्बई के डॉ० गिरीश पटेल ने "पोजिटिव थिंकिंग" की कला का वर्णन करते हुए बताया कि राजयोग का कुछ मिनट का नियमित अभ्यास मानसिक शांति व एकाग्रता बनाए रखने में बहुत

मदद कर सकता है। मन की ऐसी स्थिति का निरंतर अनुभव करने से तन्दुरुस्त, खुश तथा समद्ध जीवन बिता सकते हैं।

बड़ौदा के डॉ० जयन्त ने अपनी राय व्यक्त की कि व्यर्थ तथा तनावपूर्ण विचारों के बोझ को कम करने के लिए मन को सूक्ष्म बनाने की आवश्यकता है, क्योंकि हलके मन के साथ ही हल्कापन तथा खुशी अनुभव कर सकते हैं।

अहमदाबाद के डॉ० कोकिला ने मानसिक नियंत्रण की आवश्यकता पर बल दिया। व्यर्थ संकल्पों से बचाव करने से ही मानसिक थकावट से बच सकते हैं।

ग्वालियर से मानसिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ० आर० के० मिश्रा ने कहा कि मानसिक तनाव तथा चिंताओं को कम करने में राजयोग बहुत लाभ-प्रद है।

विलिंगडन हॉस्पीटल, नई दिल्ली के उप-चिकित्सा निरीक्षक डॉ० मेंहदीरत्ता ने कहा कि जैसे शारीरिक तन्दुरुस्ती के लिए व्यायाम जरूरी है वैसे ही मन की तन्दुरुस्ती के लिए राजयोग का अभ्यास जरूरी है।

कर्नाटक जोन की निर्देशिका, ब्र० कु० हृदय पुष्पा ने कहा कि राजयोग द्वारा अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है तथा यह मद्यपान, धूम्रपान व नशीली दवाइयों के सेवन की बुरी आदतों पर नियंत्रण करने की शक्ति देता है।

बड़ौदा से डॉ० निरंजना ने तीन मिनट के लिए सामूहिक राजयोग का अभ्यास कराया।

डॉ० हेमलता ने राजयोग के अपने अनुभव सुनाए।

अमृतसर सेवा केन्द्र पर आध्यात्मिक समारोह में उपस्थित हैं (बाएं से) ब्र० कु० राज, भ्राता, हंसराज खन्ना, डा० बलदेव प्रकाश तथा अन्य।

दिल्ली मजलिस पार्क में शिवरात्रि महोत्सव पर ध्वजारोहण के पश्चात् (दाएं से) ब्र० कु० अमृता, नगर निगम सदस्य भ्राता मंगतराम, महानगर पार्षद भ्राता महेन्द्र सिंह तथा अन्य।

"मुझे दानव से देवता बनाने वाली ब्रह्माकुमारी बहनें"

(चम्बल घाटी के कुख्यात डाकू पंचमसिंह की कहानी उन्हीं की ज़ुबानी)

मेरा जन्म ग्राम सींगपुर काना लहार में जिला भिण्ड (म० प्र०) में सन १९३८ में एक किसान परिवार में हुआ। मेरे पिता ने मुझे कक्षा ४ तक ही पढ़ाया और बचपन में ही मेरी शादी ७ वर्ष में कर दी गई। मैं गाँव में ही पढ़ाई छोड़कर खेती करने लगा एवं अखाड़े में कुश्ती लड़ने लगा। जब मैं २० वर्ष का था, तब मेरे गाँव में ग्राम पंचायतों के चुनाव हुए। चुनावों में विरोधी पार्टी से मन-मुटाव पैदा हो गया और झगड़ा हो गया। जिसमें मुझे तथा मेरे पिताजी एवं भाईयों को भारी चोटें आ गईं। मैंने थाने में रिपोर्ट की लेकिन पुलिस ने विरोधी पार्टी से रिश्वत लेकर उल्टा हमें ही सताया। हमें काफी दिन तक अस्पताल में रहना पड़ा। जब घर लौटे तो फिर विरोधी सताने लगे। गांव में रहना दूभर कर दिया। तो दुखी होकर

डाकू पंचमसिंह खूंखार स्थिति में

मैंने चम्बल घाटी में डाकू मोहरसिंह को अपनी दुख भरी कहानी सुनाई और डाकू बन गया। बन्दूक हाथ में उठा ली और गिरोह को लेकर अपने गांव में विरोधियों पर चढ़ गया। और निर्ममता से उनको मार डाला। उसके बाद तो मेरे ऊपर हत्या और खून सवार हो गया। मैंने खूंखार भयंकर रूप बना लिया। ३० आदमी मेरे गिरोह में आधुनिक हथियारों से लैस रहते थे। मैंने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में ३०० के करीब हत्यायें, डकैती एवं अपहरण के केस करें। पुलिस भी मेरे गिरोह से डरती थी। कई मुठभेड़ों में गोलियाँ चलीं, मैं चतुराई से बचकर निकल गया। कानून को मैं नहीं समझता था। अपने को चम्बल घाटी का राजा एवं प्रधानमंत्री समझता था। जो मेरी बात नहीं मानता था उसे मैं तत्काल गोली से उड़ा देता था। मेरे क्षेत्र में सारे झगड़े मैं ही निर्णय करता था। अपने क्षेत्र में मेरी मर्जी का ही एम० एल० ए०, एम० पी० चुना जाता था।

इन सब बातों के साथ ही मेरे डाकू गिरोह में कुछ नैतिक सिद्धान्त भी थे। मैं माताओं, बहनों का बहुत ही आदर करता था। डकैती के समय भी मेरा कोई डाकू मां-बहनों को हाथ नहीं लगा सकता था। डकैती के समय भी यदि उनके शरीर पर गहने पहिने होते थे, तो उन्हें उतरवाया जाता था। मैं बलात्कार को बर्दाश्त नहीं कर सकता था। एक बार मेरे गिरोह के एक डाकू ने एक किसान की लड़की से बलात्कार किया, उसकी शिकायत मेरे पास आई तो अपने साथी को पेड़ से उल्टा लटकाकर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया। मैं देवी माता की रोज़ पूजा करता था। एक किलो घी से हवन करता था, अपनी अंगुली चीर कर खून देवी पर चढ़ाता था। बकरे की बली चढ़ाता था, यह भी मैं रावण राक्षस की तरह करता था। १२ वर्ष तक मार काट, खून-खराबा, जंगली बनकर करता रहा। मेरे आंतक से तीनों प्रान्तों की सरकारें परेशान थीं। मुझे मरा या जिन्दा पकड़ने पर ७० हजार रुपये का इनाम सरकार ने घोषित किया था।

समर्पण तो किया परन्तु आत्म-समर्पण नहीं हुआ

अन्त में एक दिन ऐसा आया जब डाकू समर्पणता की योजना बनी। माधोसिंह, जयप्रकाश नारायण बाबू से मिले और कुछ शर्तों पर डाकू समर्पणता की योजना की। माधोसिंह ने मुझसे भी सम्पर्क किया और मैंने अपने साथियों के साथ जयप्रकाश नारायण बाबू के सामने हथियार डाल दिये। हम ५०० डाकूओं को सेन्ट्रल जेल ग्वालियर में रखा गया। जेल में ही शासन ने अदालत बनाई। मैंने अपना अपराध स्वीकार किया और मुझे जज साहब ने फाँसी की सज़ा दी। जो अन्त में आजीवन कारावास में बदल गई। सजा काटने के लिये हमें खुली जेल मुंगावली जेल में रखा गया। हमने हथियार तो डाल दिये थे। परन्तु हमारे संस्कार तो बदले ही नहीं थे। हमने जिनको सताया था, उनके दिलों में तो हमसे विरोध की आग जल रही थी। अतः समस्या का अन्त नहीं था।

आत्म समर्पण और प्रभु समर्पण

अन्त में एक दिन ऐसा आया, जबकि शासन से अनुमति लेकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, ग्वालियर, आगरा के ब्रह्माकुमारी-ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने हम डाकूओं के संस्कारों को बदलने एवं ज्ञान योग सिखाने खुली जेल मुंगावली में गये। वहां शासन द्वारा प्रदत्त विश्राम गृह में करीब २ माह तक ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की क्लासें चलीं। कर्मों की गुह्य गति सिखलाई। सात दिनों के सात पाठों में आत्मा का ज्ञान, परमात्मा का परिचय, परमात्मा के कर्तव्य, सृष्टि चक्र, कल्पवृक्ष, ८४ जन्मों की कहानी एवं राजयोग की विधि एवं नियम बताये। ब्रह्माकुमारी विमला बहन जी ने हमसे चार बातों की प्रतिज्ञा कराई। जिसमें ब्रह्मचर्य व्रत का पालन परम कर्त्तव्य समझ कर करना, शुद्ध अन्न का सेवन करना, दिव्य गुणों की धारणा करना, एवं रोज़ाना ज्ञान सुनना, सत्संग करना। मैंने सहर्ष ही नियम अपनाये और जेल

ब्र० कु० पंचम सिंह वर्तमान योग-स्थिति में

जीवन में ही राजयोग के नियमों पर चलने लगा। खुली जेल में मेरी पुत्री रामादेवी भी मेरे साथ थी, उसे भी ब्रह्माकुमारी बहनों का पवित्र जीवन एवं नियम अच्छे लगे और पुत्री रामादेवी ने भी अपना जीवन पवित्र एवं योगी बनाने का संकल्प किया। इस प्रकार सन १९७४ से १९८० तक जेल में ही मेरा राजयोग का अभ्यास चलता रहा अन्त में मेरे जीवन में अलौकिक परिवर्तन एवं शान्ति देखकर शासन ने १९८१ में मुझे सज़ा से मुक्त कर जेल से छोड़ दिया।

जेल से छूटने के बाद सबसे पहले मैं अपने उन विरोधियों के पास गया, जिनको मैंने सताया था। जिनके परिवारों के लोगों की हत्यायें की थीं। वे लोग मुझे देखते ही क्रोधावेष में मुझे मारने दौड़े, मैंने राजयोग अभ्यास से प्राप्त सहन शक्ति एवं

आत्मिक दृष्टि से उनको देखा और स्वतः ही उनसे कहा कि यदि मेरे को मारने से आपको शान्ति मिल जाये, और खून का बदला चुक जाये, तो मुझे गोली मार दो, मैं लिखकर देता हूं। लेकिन कमाल योग की थी, कि मेरी हृदय की सच्चाई देखकर मेरे विरोधी गदगद हो गये। मैं उनसे गले मिला, बड़ों के पैर छुये और वर्षों से चले आ रहे वैर-विरोध को क्षणों में समाप्त कर दिया। मैं ब्रह्मा-कुमारी आश्रम भोपाल और ग्वालियर गया। ब्रह्मा-कुमारी विमला बहन जी मुझे मेरे परिवार सहित माउन्ट आबू में लेकर आईं। मधुबन, आबू की तपस्या भूमि, वरदान भूमि में तो आकर जो मैंने देखा, अनुभव किया वह बहुत ही अद्भुत रहा। गुलजार बहन जी के तन में मैंने शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा को आते प्रत्यक्ष देखा। मुझे दिव्य साक्षात्कार हुआ। बाबा की दया भरी, प्रेम भरी दृष्टि जब मेरे ऊपर पड़ी तो मेरे मन में रोमांच होने लगा। आंखों से आसुओं की धारा बहने लगी। इस जन्म में किये गये भारी पाप बाबा की प्रेम भरी दृष्टि पड़ते ही दग्ध होने लगे। मैं एकदम अपने को हल्का महसूस करने लगा। मुझे ऐसा आभास हुआ कि मेरा भारी बोझा ऊपर से उतर गया है। असीम शान्ति की धारा बहने लगी। ओह! कमाल है उस परमपिता की जिसने अजामिल से भी ज्यादा पापी अंगुलीमाल एवं वाल्मीकि के समान खूंखार क्रुद्ध डाकू पंचमसिंह को एक नजर से निहाल कर दिया। मधुबन आबू में मैं एक माह तक मीठी दीदी जी एवं दादी जी एवं अनुभवी तपस्वी भाई बहनों के साथ रहा और अन्तर्मन से सच्चे दिल की गहराई से यह कह सकता हूं कि मेरे जैसे पापी के संस्कारों को बदलने की ताकत किसी मनुष्यात्मा की नहीं है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में कोई मनुष्य की शक्ति नहीं वरन् स्वयं परमपिता परमात्मा निराकार शिवबाबा ही प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के तन द्वारा कलियुग को बदलकर सतयुगी सुख शान्ति पवित्रता की दैवी दुनिया स्थापित कर रहे हैं।

वर्तमान समय मैं और मेरा परिवार राजयोग के शान्ति पथ पर चलकर लहार में रह रहा हूं। वहीं पर ब्रह्माकुमारी आश्रम की शाखा मेरे मकान पर ही मेरी लौकिक पुत्री रामादेवी चलाती है।

हमारे परिवार के अलावा ६० से अधिक अन्य भाई बहनें राजयोग की पढ़ाई रोज पढ़ने आते हैं। मैंने जो सुख, शान्ति, पवित्रता इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से प्राप्त की है, उसे मैं चम्बल घाटी के गांव-गांव में जाकर मेरे जैसे भूले भटके भाइयों को सुनाता हूं। उन्हें सही रास्ता बताता हूं। शासन से अनुमति लेकर जेलों में जाकर अपराधियों को अपना ज्ञान योग द्वारा परिवर्तन का अनुभव सुनाता हूं। ताकि लोग दया, क्षमा, करुणा एवं प्रेम का मार्ग अपनाकर विश्व में शान्ति सुख से रहें।

ब्रह्माकुमार पंचमसिंह
चम्बल संभाग, भिण्ड
(मध्यप्रदेश)

झज्जर में ब्र० कु० गुलजार बहन ब्र० कु० मामचन्द को ईश्वरीय स्नेहयुक्त दृष्टि देते तथा गुलदस्ता भेंट करते हुए।

शान्ति गीत

ब्र० कु० रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार।
मिट रही है, मिट रही है यह अशान्ति अपार !
आ गये हैं, आ गये हैं स्वयं शिव भगवान
दे रहे हैं, दे रहे हैं सत्य गीता-ज्ञान
कर रहे हैं, कर रहे हैं सृष्टि का उद्धार।
आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार !
दिव्य कर्म निमित्त ब्रह्मा प्रकट हैं मतिमान
हो रहा है, पुनः नूतन विश्व का निर्माण
रुद्र-गीता-ज्ञान-यज्ञ बना पुनः आधार।
आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार !
रुद्र-गीता-ज्ञान लाता है पुनः कल्पान्त
काल-जर्जर कलिनरक का हो रहा है अन्त
खुल रहे हैं सतयुगी सुख-स्वर्ग के फिर द्वार।
आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार !
हो रहा है पुनः नूतन कल्प का आरम्भ
मिल रहा है देव मानव-को अमृत का कुम्भ
अमरता का स्वप्न होता है पुनः साकार।
आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार !
शिव पिता परमात्मा सुख-शान्ति के आगार
सद्गुणों का मानवों में कर रहे संचार
आत्माएं पा रहीं परमात्मा का प्यार।
आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार !
मनुज को फिर देव बनने का मिला सन्देश
बदलती हैं आत्माएं, बदलता परिवेश !
बदलता है जगत-जीवन, विश्व का व्यापार।
आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार !
पुण्यमय दैवी जगत का बना दिव्य विधान
पापमय संसार का है हो रहा अवसान
अब असत् की हार है, अब सत्य की जयकार।
आ रहा है, आ रहा है शान्ति का संसार !

शिक्षा का केंद्र बिंदु शान्ति होना चाहिए

विश्व शान्ति महासम्मेलन के अन्तर्गत वर्कशाप में "शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शान्ति" विषय पर मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए डाक्टर डी० आई० ठाकुर वाइस चांसलर कृषि विश्व विद्यालय, सोलन हिमाचल प्रदेश ने अपना प्रभावी भाषण प्रारम्भ तुलसीदास जी की रामचरित मानस के एक दोहे "बिन सत्संग विवेक न होई" से किया और आगे कहा कि शिक्षा भौतिकवादी क्षेत्र में हो गई हो तो शान्ति कहाँ से आयेगी। अब समय आ गया है जबकि शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शान्ति होना चाहिये। और शान्ति की स्थापना सत्संग यानि एक सत्य पिता परमात्मा के संग से ही हो सकती है और मुझे खुशी है कि इस क्षेत्र में यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय बहुत अच्छे ढंग से काम कर रहा है।

मैसूर विश्व विद्यालय के उपकुलपति प्रो० के० एस० हेगड़े ने शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त तमाम बुराइयों की विवेचना करते हुए बहुत दुःख प्रकट किया और यह स्वीकार करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि वास्तव में आज की शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शान्ति होना चाहिए। किन्तु शान्ति बिना अपने को जाने आ नहीं सकती, इसके लिये प्रत्येक मानव को शिक्षित करना होगा और इस विषय में मैं प्रसन्नता-पूर्वक कहना चाहता हूं कि ब्रह्माकुमारियां संसार में शान्ति की स्थापना के लिए परमात्मा के सन्देश को पहुंचाने में अग्रणी हैं।

कर्नाटक विश्व विद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति विद्वान भ्राता सदाशिव वाडेयर ने कहा कि हिरोशिमा और नागासाकी के आधुनिक हथियारों द्वारा विनाश का असर अभी समाप्त नहीं हुआ कि इधर उससे हजारों गुणा शक्तिशाली एटोमिक हथियारों की होड़ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है। मानवता डरी हुई है कि हम रहेंगे या नहीं। मैं दिल से इस संस्था के कार्य-कलाप से प्रसन्न हुआ हूं। यह मेरे जीवन का सर्वोत्तम अवसर है कि मैं आबू में विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर आया हूं।

ब्रह्माकुमारी वेदान्ती बहन ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि ऐसा लगता है आज पीस के पीसेज यानी शान्ति के टुकड़े हो गये हैं। ऐसे समय में स्वयं को जानने, आत्मविश्वास को जगाने और दैवी गुणों की धारणा की आवश्यकता है और ये गुण हम संसार के निर्देशक परमपिता परमात्मा से योग लगाकर प्राप्त कर सकते हैं और इसी शिक्षा द्वारा ही हम वास्तविक शिक्षित यानी ज्ञानी कहलायेंगे।

इस सभा के सफल निर्देशक प्रवक्ता विदेश से आये भाई केन ने आशा प्रकट की कि इस विश्व अशान्ति के समय शिक्षा का केन्द्र बिन्दु यदि शान्ति न हुआ तो विश्व में महाभारी विनाश हो सकता है।

तमिलनाडू से आई इस सभा की अध्यक्षता ब्रह्माकुमारी रोजी बहन ने अपने संदेश में कहा कि आज विद्यार्थियों, अध्यापकों व सरकार के बीच का सामंजस्य बिगड़ चुका है, ऐसे समय में राजयोग की शिक्षा द्वारा सभी का कल्याण हो सकता है, क्योंकि राजयोग अनुशासित ढंग से जीवन जीने की कला है।

संगम प्रिंटिंग सर्विस कंपनी, भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली-32 मुख्य सम्पादक : जगदीश चन्द्र जी,
ब्र० कु० आत्मप्रकाश बी 9/19 कृष्ण नगर द्वारा सम्पादन तथा प्रकाशन

शान्ति के लिए विज्ञान

महासम्मेलन के अन्तर्गत "शान्ति के लिए विज्ञान" वर्कशाप में बोलते हुए लण्डन से पधारे भ्राता निवीली, पत्रकार ने कहा कि अभी तक विज्ञान प्राकृतिक अनुसंधान तक ही सीमित है। अब समय है कि विज्ञान शरीर और आत्मा के सम्बन्ध की ओर भी ध्यान दे और अनुसंधान करे।

सैनफ्रांसिस्को के डा० वेलिरियो, डारैक्टर बायो-एनर्जी फ़ील्डज़ लैबारेटरी ने कहा कि विज्ञान को दैवी योजनाओं तथा स्थूल द्रव्यों के नियमों को जानने का प्रयास करना चाहिये।

ब्र० कु० जूलियन बोल्ज़, वैज्ञानिक लन्दन का विचार था कि विज्ञान केवल स्थूल जगत के विषय में तो जानकारी देता है परन्तु स्वयं (आत्मा) की पहचान नहीं कराता। इस शरीर को चलाने वाली शक्ति कौन-सी है। मन की बीमारियों का कोई सूक्ष्म हल चाहिए।

ब्र० कु० जुलिटा, सिविल इन्जीनियर, ब्राज़ील का विचार था केवल ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय जैसी युनिवर्सिटी ही विज्ञान और अध्यात्म में समन्वय ला सकती है।

ब्र० कु० मोहन सिंघल ने प्रश्न किया कि विज्ञान ने कई चमत्कार किए हैं परन्तु इसने शान्ति और सुख के लिए क्या किया है। मानव साधनों का गुलाम बन गया है। शान्ति उच्च-चेतना की स्थिति है।

पश्चिमी जर्मनी से डा० वाल्टर फ्रैंक का कहना था कि प्रकृति द्वारा निर्मित सर्वत्र, विज्ञान विनाश करने पर उतारू है। विज्ञान केवल उन तथ्यों को सुलझा रहा है जिसे आध्यात्मवादी हज़ारों साल से समझते हैं।

सानफ्रांसिस्को के डा० विलयन हर्मन ने कहा कि अधिकतम मानसिक क्रिया अचेतन मन से चलती रहती है। यह हमारे विचार हैं, परन्तु हम अपनी विचार धारा परिवर्तन कर सकते हैं। हमें स्वयं पर और दूसरों पर विश्वास करना सीखना चाहिये। जो मेरे साथ घटता है उसके लिए मैं स्वयं जिम्मेदार हूं और मुझे स्वयं को जानने, समझने की पूरी इच्छा है।

डा० एल० एस० माथुर डारेक्टर जनरल ओबज़र्वेट्री (अवकाश प्राप्त) ने कहा हमें अपने नैतिक और आध्यात्मिक दायरे को इस प्रकार विशाल करना होगा कि समाज का हर प्राणी केवल मानव मूल्यों का बखान ही नहीं करेगा परन्तु अमल में भी लाएगा। अन्त में यूडनवर्ग की ब्र० कु० लेन ने सर्व को राजयोग का अभ्यास कराया।

मरिषी में डाक्टरों के लिए आयोजित स्नेह मिलन में उपस्थित ब्र० कु० निरंजना प्रवचन करते हुए। मंच पर (बाएं से) ब्र०कु० शारदा, ठाकर जी भाई, प्रमुख जी तथा ब्र०कु० अनिल बैठे हैं।

शांति स्थापना करने में प्रचार साधनों का योगदान

विश्व शान्ति महासम्मेलन के अन्तर्गत वर्कशाप शान्ति स्थापना करने में प्रचार साधनों का योगदान में ब्र० कु० करुणा ने जो कि मधुबन माउण्ट आबू में लोक सम्पर्क अधिकारी हैं, मनुष्य मात्र के उत्थान के लिए प्रचार साधनों को काम करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। वर्तमान प्रचार साधन जीवन पर बहुत ही प्रभाव रखता है। उदाहरण के तौर पर उपग्रह द्वारा २० हज़ार मील की दूरी से हम सेकेण्ड में एक दूसरे से सम्वन्ध जोड़ सकते हैं। जनता यह जानना चाहती है कि विश्व में क्या हो रहा है और प्रचार साधन विश्व में होने वाले घटनाओं के विषय में अपने २ विचार पेश कर सकते हैं। आज-कल प्रचार साधनों में नैतिक व आध्यात्मिक संकट छाया हुआ है। मध्यस्थ ब्र० कु० शारदा ने याद दिलाया कि जब मन में युद्धवृत्ति उत्पन्न होती है तो संसार में युद्ध छिड़ जाता है। इसलिए प्रचार साधनों में कार्य करने वालों को अपने मन में शान्ति रखनी चाहिए। दूसरे वक्ता भ्राता जी० जी० मीरचन्दानी जनरल मैनेजर यू० एल० आई० सभा को बताया। वर्तमान सब प्रकार की खबरों की रिपोर्ट करना न्यूज ऐजेन्सी का कर्तव्य है। प्रचार साधन इन घटनाओं को उत्पन्न नहीं करता और हिंसा की खबरों को रिपोर्ट करना बन्द नहीं कर सकता जबकि विश्व में हिंसा की बातें होती हैं।

अब इसका हल क्या है प्रचार साधन हिंसा को रोकने में कैसे सहायता कर सकता है। जिम्मेवार सम्पादकों की खबरों को इस ढंग से नहीं छापना चाहिये। जिससे जनता में घृणा आवेश को बढ़ावा मिले। लोगों को जन आन्दोलन चलाना चाहिए जिसके कारण लेखक और सम्पादक शान्ति का सन्देश फैलाएँ। नाटक, ड्रामा और खेल पार्टी भी प्रचार के साधन हैं इनको भी प्रयोग में लाना चाहिए। दूरदर्शन पर भी ड्रामा दिखाना चाहिए। बच्चों के लिए उनकी पुस्तकों में नाटक आदि दिलवाना चाहिए क्योंकि बच्चे अपने चरित्र को इसी आयु में बना सकते हैं।

भ्राता बालेश्वर प्रसाद अग्रवाल जनरल मेनेजर हिन्दुस्तान समाचार नई देहली ने अपने भाषण में कहा कि विश्व शान्ति को प्रचार साधनों से कोई खतरा नहीं है क्योंकि सब साधनों पर सरकार का नियन्त्रण है। वह लोग ही प्रचार साधनों को अपनी इच्छाओं अनुसार प्रयोग में लाते हैं। भ्राता अग्रवाल ने सुझाव दिया कि लोगों को युद्ध से हानि होने वाली फ़िलमें दिखानी चाहिये ताकि लोग युद्ध से नफ़रत करें।

भ्राता रमेश चन्द्र प्रधान सम्पादक और मैनेजिंग डायरेक्टर समाचार पत्र, जालन्धर ने बताया कि समाचार पत्रों के मालिकों में बड़ा भारी दोष है। उन्हें पत्रकारों से शान्ति के ऊपर विषय लिखवाने चाहिये और अपने समाचार पत्रों में डालना चाहिये। भ्राता के० सीतल, प्रधान सम्पादक 'दी इण्डियन' हागकाँग ने अपने व्यक्तव्य में ज़ोर दिया कि विश्व शांति स्थापन करने के लिए व्यक्ति के दृष्टिकोण और स्वभाव में परिवर्तन की आवश्यकता है। भ्राता टी० वी० लक्ष्मण राव उप-समाचार सम्पादक 'इण्डियन एक्सप्रेस' हैदराबाद ने समाचार पत्रों के पाठकों को दोषी ठहराया। यदि विश्व शाँति महासम्मेलन के समाचार को छापा जाय तो इन खबरों को पढ़ने में रुचि नहीं लेंगे।

समाचार पत्रों को पाठक की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिये। भ्राता रामऋषि शुक्ला पत्रकार लखनऊ ने बताया कि पत्रकारों का दृष्टिकोण अपक्षपाती होना चाहिए और उनका लेख सच्चाई पर आधारित हो मुझे आशा है विश्व में अशान्ति की समस्या हल हो जायेगी। ब्र० कु० वसुराज सम्पादक विश्व नव-निर्माण हुबली ने कहा कि यह बड़ा ही आवश्यक है कि प्रचार साधनों में आध्यात्मिक समाचार के लिए स्थान या समय देना चाहिए। ब्र० कु० डैन्जीगोल्ड पत्रकार ब्राजील ने अपने भाषण में बताया कि लगातार प्रचार साधनों

(शेष पृष्ठ २३ पर)